शुक्रवार
27 दिसम्बर 2024
● देहरादून
● वर्ष 32
● अंक 314
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

32 साल से देहरादून का विश्वास

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94
email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com
डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

एनआरआई महिला की 20 करोड़ की संपत्ति का फर्जीवाडा

शेरखान गैंग के मूंछ सहित तीन गिरफ्तार

संवाददाता

देहरादून। एनआरआई महिला की बीस करोड की सम्पत्ति का फर्जीवाडा करने वाले शेरखान गिरोह के सोनू मूंछ सहित तीन लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर उनको न्यायालय में पेश किया जहां से उनको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार थाना राजपुर पर वादिनी श्रीमती सुमन देवी, निवासी किशनपुर, राजपुर देहरादून द्वारा प्रार्थना पत्र दिया कि उनकी सहेली श्रीमती रितु मेहता द्वारा किशनपुर स्थित उनके जमीन व बंगले की देखरेख हेतु उनको रखा गया था। शेरखान आदि लोग जो कि गिरोह बनाकर काम करते हैं के द्वारा उनकी उक्त जमीन व बंगले के फर्जी दस्तावेज तैयार कर उस पर कब्जा करने का प्रयास किया गया। प्राप्त तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्रकरण की गंभीरता की दृष्टिगत वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा थाना अध्यक्ष राजपुर को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए उक्त निर्देशों के क्रम रजिस्ट्री कार्यालय देहरादून, राजस्व विभाग व विभिन्न बैंकों से विवेचना से संबंधित दस्तावेज प्राप्त

किए गए तथा दस्तावेज व साक्षय के आधार पर आरोपियों के संबंध में सुरागरसी -पतारसी करते हुए सूचना पर भूमि धोखाधड़ी में शामिल विकास सुंदरियाल उर्फ सोनू मूंछ पुत्र किशन चंद निवासी अपर राजीव नगर थाना नेहरू कॉलोनी, विनोद कुमार उर्फ केडी पुत्र स्वर्गीय गुल चरण निवासी ऋषि नगर सहस्त्रधारा रोड थाना रायपुर, मुकेश चौहान पुत्र स्वर्गीय गेंदा सिंह निवासी अजबपुर कला दीपनगर थाना नेहरू कॉलोनी देहरादून व प्रमोद गिरी पुत्र स्वर्गीय समुद्र गिरी निवासी दीप नगर थाना नेहरू कॉलोनी को गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में आरोपियों द्वारा बताया गया कि जमीनों पर कब्जा करने हेतु उन्होंने एक गिरोह बना रखा है। जिसमें करीब 10-12 लोग शामिल है और उनका सरगना शेरखान है। उनके द्वारा शहर में खाली जमीन व मकान जिस पर कोई नहीं रहता है की रेकी कर उसके संबंध में जानकारी हासिल कर उक्त जमीन व मकान के फर्जी दस्तावेज तैयार करते हैं तथा दस्तावेज तैयार होने पर वह उक्त जमीन व मकान पर कब्जा करते हैं। उक्त गिरोह द्वारा शहर में कई जमीन व मकान में इसी तरीके से कब्जा करना प्रकाश में आया है, जिनकी जांच की जा रही है। पुलिस के अनुसार विकास सुंदरियाल उर्फ सोनू मूंछ तथा शेरखान पर उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड में कई मुकदमे दर्ज हैं। सभी आरोपियों के आपराधिक इतिहास की जानकारी की जा रही है।

न्याय की मांग को लेकर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने खुद पर बरसाये कोड़े

हमारे संवाददाता

तमिलनाडू। अन्ना यूनिवर्सिटी यौन उत्पीड़न मामले में न्याय की मांग को लेकर, तमिलनाडु बीजेपी प्रमुख अन्नामलाई ने एक अनोखा प्रदर्शन करते हुए खुद को कोड़े मारे। अपने घर के बाहर कई लोगों के सामने उन्होने खुद को कोड़े मारे जिसका एक वीडियो सोशल मीडिया पर खूब पर वायरल हो रहा है। बीते रोज अन्नामलाई ने कहा था कि वह अन्ना यूनिवर्सिटी की छात्रा के दुखद यौन उत्पीड़न पर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए 27 दिसंबर को सुबह 10 बजे कोयंबटूर में अपने घर के बाहर खुद को छह बार कोड़े से मारेंगे। साथ ही यह ऐसे मामलों से निपटने में पुलिस और

सरकार की उदासीनता का विरोध भी है। उन्होंने यह भी कहा था कि जब तक द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके) सत्ता से बाहर नहीं हो जाता, वह सैंडल नहीं पहनेंगे। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता ने द्रमुक नेताओं के साथ आरोपी की तस्वीरें दिखाते हुए आरोप लगाया कि वह सत्तारूढ़ पार्टी की छात्र शाखा का पदाधिकारी था। उन्होंने मीडिया से कहा, यह बहुत सरल है। उन्होंने आरोप लगाया कि क्योंकि आरोपी सत्ता पक्ष से जुड़ा था, इसलिए पुलिस ने उसके खिलाफ कार्रवाई नहीं की। साथ ही उन्होंने ऐसे अपराधों को रोकने के लिए निर्भया फंड के इस्तेमाल के बारे में जानना चाहा।

एक नजर

नगर निकाय चुनाव से जुड़ी बड़ी खबर, रविवार को भी होगा नामांकन

देहरादून(हमारे संवाददाता)। उत्तराखण्ड नगर निकाय चुनाव को लेकर एक बड़ी खबर सामने आयी है। नगर निकाय चुनाव प्रक्रिया के दौरान रविवार को भी नामांकन किये जा सकेंगे। राज्य निर्वाचन आयोग उत्तराखण्ड, द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार आगामी नगर स्थानीय निकाय निर्वाचन हेतु निर्गत डाक मतपत्रों (पोस्टल बैलेट पेपर) के सम्बन्ध में "सेवा नियोजित" का आशय है जिस निर्वाचक का नाम उस प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्र की निर्वाचक नामावली में दर्ज है और वह (क) भारतीय सशस्त्र सेनाओं का सदस्य है। (ख) केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बल का सदस्य है। (ग) किसी राज्य के सशस्त्र बल का ऐसा सदस्य जो राज्य के बाहर सेवा कर रहा है। (घ) किसी ऐसे सशस्त्र बल का सदस्य जिस पर आर्मी एक्ट, 1950 लागू होता है। डाक मतपत्रों (पोस्टल बैलेट पेपर) को जारी किये जाने के संबंध में उपरोक्तानुसार कार्यवाही की जानी है। वहीं राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा उपरोक्त के अतिरिक्त यह भी अवगत कराया गया है कि रविवार दिनांक 29.12.2024 को भी निर्वाचन आयोग द्वारा निर्गत कार्यक्रमानुसार नामांकन प्रक्रिया गतिमान रहेगी।

चरस के साथ तीन गिरफ्तार

देहरादून(संवाददाता)। पुलिस ने चरस के साथ तीन लोगों को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उनको न्यायालय में पेश किया जहां से उनको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रेमनगर थाना पुलिस ने बिधौली के पास स्कूटी सवार तीन लोगों को रूकने का इशारा किया तो वह पुलिस को देख स्कूटी को तेजी से भगा ले गये। पुलिस ने पीछा कर तीनों को थोडी दूरी पर ही रोक लिया। तलाशी लेने पर पुलिस ने तीनों के कब्जे से 515 ग्राम चरस बरामद कर ली। पूछताछ में उन्होंने अपने नाम हिमांशु गुसाई पुत्र जसपाल सिंह गुसाई निवासी स्मिथ नगर मोहनपुर, रोहन थलेडी पुत्र दिनेश थलेडी निवासी स्मिथ नगर एन्क्लेव, रजनीश कुमार पुत्र मुन्ना लाल निवासी बनियावाला गोरखपुर बताया। पुलिस ने तीनों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उनको न्यायालय में पेश किया जहां से उनको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

दून वैली मेल

संपादकीय

असहिष्णुता की प्रकाष्ठा

वर्तमान दौर की राजनीति की और कोई उपलब्धि हो या ना हो लेकिन उसने देश के समाज में नफरत और असहिष्णुता का जहर उस हद तक घोल दिया है कि वह राष्ट्रीय एकता तथा अखंडता के लिए एक गंभीर खतरा बन चुका है। संविधान भले ही सर्व धर्म समभाव और धर्मनिरपेक्ष समाज की पैरोंकारी करता हो तथा देश की सभ्यता और संस्कृति वसुदेव कुटुम्बकम की रही हो लेकिन जाती पाती और धर्म के आधार पर विभेद की जो लकीरें अपने राजनीतक स्वार्थों के लिए नेताओं तथा राजनीतिक दलों द्वारा खींची जा रही है वह अत्यंत ही चिंतनीय व विघटनकारी है। अभी 4 दिन पूर्व देश के गृहमंत्री अमित शाह द्वारा डॉ भीमराव अंबेडकर पर राज्यसभा में आपत्तिजनक टिप्पणी किए जाने का विवाद थमा भी नहीं है कि पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेई की जयंती समारोह में लोक गायिका देवी द्वारा रघुपति राघव राजा राम भजन गाए जाने पर भारी बखेड़ा कर दिया गया जिसके बाद उन्हें सार्वजनिक मंच से माफी मंगवाई गई। खास बात यह है कि भाजपा नेताओं ने खुद ही उनसे भजन गाने का अनुरोध किया था और उन्होंने राष्ट्रपिता गांधी का लोकप्रिय भजन रघुपति राघव राजा राम गाना शुरू किया तथा वह भजन की ईश्वर अल्लाह तेरे नाम वाली लाइन पर पहुंची तो लोगों ने हंगामा खड़ा कर दिया कार्यक्रम में रविशंकर से लेकर अश्वनी चौबे व शाह नवाज हुसैन तक तमाम बड़े नेताओं की मौजूदगी में हुए इस हंगामें के बाद भोजपुरी गायिका देवी ने सार्वजनिक मंच से यह कहते हुए माफी मांगी कि अगर इस भजन से किसी की भावनाएं आहत हुई है सॉरी और वह मुंबई वापस लौट गई। यह घटना देश में फैलती नफरत और घृणा तथा आपसी विद्वेश का प्रतीक या उदाहरण भर नहीं है बल्कि भावी समय में होने वाले गृह युद्ध की चेतावनी है। भाजपा के 10 साल के शासनकाल में लव जिहाद और लैंड जिहाद जैसे मुद्दों या गौ रक्षा के नाम पर अथवा हर मस्जिद को खोद कर मंदिर की तलाश करने का जो अभियान चलाया जा रहा है तथा नेहरू, गांधी और डॉ अंबेडकर को अपमानित करने का काम किया जा रहा है उसके परिणामों के नतीजे ही है। इतने समय में भाजपा की नेता अब अपने एजेंडे पर खुलकर सामने आ चुके हैं। बात महात्मा गांधी की हो या फिर डा. अंबेडकर की, ज्योतिबा फुले की हो या शहीद ए आजम भगत सिंह क्या उनका अपमान करने से किसी भी नेता का सम्मान बढ़ सकता है। आजादी के 65 सालों में किसने क्या किया उसका ढोल पीट कर क्या मिलने वाला है बीते 10 सालों से अगर आप सत्ता में है तो जनता आपसे पूछेगी कि आपने इतने सालों में क्या किया है। बीते दिनों यूपी के संभल और उत्तराखंड के उत्तरकाशी में मस्जिदों को लेकर जो बवाल हुआ उसके पीछे कौन सी सोच काम कर रही है। पटना में बापू के भजन को लेकर जिस तरह का हंगामा खड़ा किया गया वह कौन सी सोच है? सवाल यह है कि देश में सांप्रदायिकता का जहर फैलाकर और नफरत की आग लगाकर क्या तुम खुद भी सुरक्षित रह सकोगे किसी दल और नेता को यह नहीं भूलना चाहिए कि उनके घर भी इसी देश में है। अगर देश में आग लगेगी तो उनका घर भी जलने से नहीं बचेगा। जिस बिहार में यह घटना घटित हुई वहां नीतीश कुमार मुख्यमंत्री हैं जो भाजपा के सहयोगी हैं। उन्हें बताना चाहिए कि क्या बापू का भजन गाना भी अपराध है? क्या वह अभी भी भाजपा की सोच का समर्थन करते हैं और अगर नहीं करते हैं तो फिर एनडीए के साथ क्यों नहीं छोड़ देते।

खानपुर क्षेत्र के नगला इमरती पहुंचे सीएम धामी, सभा को किया संबोधित

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। खानपुर विधानसभा क्षेत्र के नगला इमरती गांव में पहुंच कर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सभा को संबोधित किया। उससे पूर्व धामी ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए 1 मिनट का मौन रखा राजकीय शोक होने के कारण उन्होंने कार्यक्रम में किसी प्रकार का सम्मान भी नहीं करवाया। संबोधन के दौरान उन्होंने लंढौरा लक्सर मार्ग का नाम स्व. राजा नरेंद्र सिंह के नाम पर रखे जाने की घोषणा की।

पूर्व विधायक कुंवर प्रणव सिंह चैम्पियन के संयोजन में आयोजित कार्यक्रम में पहुंचे मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का स्वागत कुंवर प्रणव और रानी देवयानी ने सोने का मुकुट, तलवार आदि भेंट कर किया। हालांकि सीएम ने राष्ट्रीय शोक होने के कारण मालाएं मुकुट आदि पहनने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि पहले यह सम्मान कार्यक्रम था लेकिन पूर्व प्रधानंत्री डॉ मनमोहन सिंह का निधन होने के कारण पूरा देश आज शोक में है इसलिए इस प्रकार के कार्यक्रम को स्थगित किया है। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम तय था और जनता को सूचना जा चुकी थी इस कारण वह कार्यक्रम में आए उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री को एक मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी। उन्होंने उनके निधन को अपूर्णीय क्षति बताया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने प्रदेश सरकार की योजनाएं गिनाई। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार में प्रदेश में कई लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाएं

गए इसके साथ ही कई कंपनियां प्रदेश में स्थापित हुई। उन्होंने कहा पूरे प्रदेश में एक लाख लखपति दीदी बन चुकी है जबकि सवा लाख का लक्ष्य जल्द पूरा करेंगे। वहीं कहा कि धर्मांतरण कानून लागू किया और दंगा विरोधी कानून भी बनाया गया। नकल विरोधी कानून बनाया गया। कहा कि उन्होंने लैंड जिहाद और थूक जिहाद के खिलाफ भी ठोस कदम उठाए हैं। वहीं समान नागरिक संहिता को लागू किया जिसकी मांग देश की आजादी के बाद से उठती आई थी। उन्होंने कहा कि प्रदेश बाबा साहेब के बताए रास्ते पर चलने का काम प्रदेश की सरकार कर रही है। इसके साथ ही किसानों के हित में कई कार्य सरकार द्वारा किए गए। मुख्यमंत्री ने संबोधन के अंत मे लक्सर लंढौरा मार्ग का नाम स्वर्गीय राजा नरेंद्र सिंह के नाम रखने की घोषणा की इसके साथ ही चैम्पियन की अन्य मांगों पर सहमति जताते हुए जल्द पूरा करने की बात कही। वहीं कार्यक्रम संयोजक पूर्व विधायक कुंवर प्रणव सिंह ने कार्यक्रम में पहुंचे मुख्यमंत्री का आभार जताया उन्हें प्रदेश की जनता का हितैषी बताते हुए कहा कि पुष्कर सिंह धामी प्रदेश ही नहीं बल्कि देश के सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्रियों में से एक हैं और उन्होंने देश में बड़े आयाम स्थापित किए हैं। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष किरण चौधरी, रुड़की विधायक प्रदीप बत्रा, राज्य मंत्री श्यामवीर सैनी, जिलाध्यक्ष शोभाराम प्रजापति,पूर्व मंत्री यतीश्वरानंद, पूर्व विधायक संजय गुप्ता, पूर्व विधायक देशराज कर्णवाल, पूर्व विधायक सुरेश राठौर, मंडल अध्यक्ष रवि राणा, पूर्व राज्य मंत्री मनोहर लाल शर्मा, सुशील राठी, ममतेश शर्मा,रजनीश शर्मा, मनोज नायक, बबलू राणा आदि मौजूद रहे।

विद्युत उपभोक्ताओं को राहत दिलाने को मोर्चा ने नियामक आयोग में दी दस्तक

संवाददाता

देहरादून। विद्युत उपभोक्ताओं को राहत दिलाने के लिए मोर्चा ने नियामक आयोग में दस्तक दी। आज यहां जन संघर्ष मोर्चा प्रतिनिधिमंडल ने मोर्चा अध्यक्ष रघुनाथ सिंह नेगी के नेतृत्व में विद्युत नियामक आयोग के अध्यक्ष एम.एल. प्रसाद से मुलाकात कर लाइन लॉस (डिस्ट्रीब्यूशन लॉस) एवं ए.टी एंड सी. लॉसेस कम कराने का आग्रह किया, जिस पर श्री प्रसाद ने कार्यवाही का भरोसा दिलाया। नेगी ने कहा कि लाइन लॉस के चलते विद्युत उपभोक्ताओं को महंगी बिजली खरीदने पर मजबूर होना पड़ रहा है।

नेगी ने कहा कि गत वर्ष 2023-24 तक विद्युत वितरण हानियां 13.89 फीसदी एवं एटी एंड सी हानियां 14.64 फीसदी थी, लेकिन लॉसेस बढ़ते- बढ़ते अगस्त 2024 तक लाइन लॉस 18.96 फीसदी एवं एटीएंड सी हानियां 33.41 फीसदी तक पहुंच गई, जोकि बहुत बड़ी हानि है तथा इसका बोझ फिर जनता के सर पड रहा है, जिसके चलते 1500- 2000 करोड़ रुपए की राजस्व हानि हो रही है। एक किलोवाट तक के उपभोक्ताओं को मोर्चा पूर्व में राहत दिला चुका है। नेगी ने हैरानी जताई कि सरकार एवं उसके अधिकारी विद्युत लाइन लॉस कम करने में क्यों नाकाम साबित हो रहे हैं क्यों दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं। नेगी ने कहा कि अगर आंकड़ों की बात करें तो सबसे ज्यादा लाइन लॉस विद्युत वितरण खंड, रुड़की (अर्बन) 39.48 फीसदी, रुड़की ग्रामीण 42.89, रुद्रपुर-द्वितीय 37.34 फीसदी, बागेश्वर 32.62 फीसदी, लक्सर 35.25, रुड़की सेंटर 34.35 वाले डिवीजन/ केंद्र हैं तथा कई ऐसे खंड हैं, जो 25- 30 तक पहुंच गए हैं, जिनकी वजह से पूरे प्रदेश का विद्युत उपभोक्ता कराह रहा है। अगर ए टी एंड सी लॉसेस की बात करें तो अगस्त 2024 तक रुड़की (अर्बन) 53. 65, रुड़की (ग्रामीण) 53.24,बागेश्वर 49.82,अल्मोड़ा 50.13,रामनगर 48. 20,हल्द्वानी 50.01 फीसदी तक पहुंच गई है। वर्ष 2022-23 तक लाइन लॉसेस 14.41 फीसदी थी। राजभवन /सरकार /विभाग सभी जनता की बर्बादी का जश्न मना रहे हैं। नेगी ने कहा कि ऊर्जा बचाओ/ बिजली बचाओ का नारा हवा हवाई हो गया है। प्रतिनिधिमंडल में- मोर्चा महासचिव आकाश पंवार, प्रवीण शर्मा पिन्नी व भीम सिंह बिष्ट मौजूद थे।

नाखून चबाता है आपका बच्चा तो इन आसान तरीकों से छुड़ाएं

अमूमन हर बच्चा नाखून चबाता है और बड़े होने पर भी बच्चे अपनी इस आदत को छोड़ते नहीं हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि जिन बच्चों के माता-पिता नाखून चबाते हैं, उनके बच्चों में भी इस आदत का जोखिम अधिक रहता है। कभी-कभी नाखून चबाना मानसिक और भावनात्मक तनाव का भी संकेत हो सकता है। घबराहट, बेचैनी या दुख महसूस होने पर भी बच्चे ऐसा करते हैं। इस तरह की भावनाओं से निपटने का यह एक तरीका हो सकता है। आइए जानते हैं बच्चों के नाखून चबाने की आदत के पीछे क्या कारण हैं और इससे कैसे छुटकारा पाया जा सकता है। नाखून चबाने से स्थायी रूप से कोई नुकसान तो नहीं होता है लेकिन हां ये आपके बच्चे को निम्न रूप से प्रभावित जरूर कर सकता है। *जब नाखूनों के आसपास के ऊतक क्षतिग्रस्त हो जाते हैं, तो वे सही तरीके से बढ़ना बंद कर सकते हैं। इससे नाखून भद्दे या अजीब दिख सकते हैं। *नाखून चबाते समय दांत पर क्रैक आने का भी खतरा रहता है। समय के साथ अगर इस आदत को न छोड़ा जाए तो जबड़े से संबंधित परेशानियां हो सकती हैं। *हाथों का कीटाणुओं का घर कहा जा सकता है। नाखूनों में कीटाणु सबसे ज्यादा छिपे रहते हैं। जब दिन में कई बार मुंह में उंगलियां डालते हैं तब बीमार होने का खतरा बढ़ जाता है। वहीं नाखून चबाने पर स्किन को नुकसान भी पहुंच सकता है। *इस आदत को छुड़ाने का सबसे आसान तरीका है कि आप बच्चों के नाखून समय-समय पर काटती रहें। मां का दूध छुड़ाने के लिए भी स्तनों पर कोई खराब स्वाद वाली चीज को लगाने का तरीका अपनाया जाता है। *मैनीक्योर करवाने से नाखून साफ रहते हैं और उनमें जमा कीटाणु बाहर आ जाते हैं।

मुनाफा कमाने के चक्कर में गंवाये दस लाख रुपये

संवाददाता

देहरादून। मुनाफा कमाने के चक्कर में दस लाख रूपये गंवाने के मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार बल्लूपुर चौक निवासी मौहम्मद चांद अंसारी ने कैण्ट कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि अरबाज नाम व्यक्ति का कॉल आता है। जो कि एक कंपनी जिसका नाम सहारा इंडस्ट्री के बारे में विवरण देते हुए ये कहा जाता है कि अगर वह उनके साथ स्टॉक मार्केट में इनडेस्क चार्ट मे काम करते है तो आपको मुनाफा 30 प्रतिशत से 40 प्रतिशत प्रतिदिन के तौर पर होगा। उसने उन्हें काम दिखाने के लिए बोला तो उन्होंने उसे 1-2 स्टॉक मार्केट ट्रेड मुहैया कराई। उसमें छोटा मोटा प्रॉफिट हुआ तो उन्होंने उसको उसका पैकेज के बारे में बताया जिसको वह आसान किस्तों पर भी ले सकते थे। शुरुआत में उसने इस कम्पनी को थोड़े पैसे देकर काम शुरू किया तो शुरुआत टाइम में उन्होंने ट्रेड्स दी तो वो प्रॉफिट मे रही। फिर इसी कम्पनी के व्यक्ति जिसका नाम अरबाज है उसने उसें ओर पैसे जमा कराने के लिए बोला तो वह जमा करता रहा। उसको ये भी जानकारी फ्रॉड कंपनी की और से दी गई कि वो सेबी पंजीकृत कंपनी है। उनकी वेबसाइट पर भी सेबी का लोगो लगा हुआ है। उनकी वेबसाइट है इसी विश्वास पर उसने उनको थोड़े-थोड़े पैसे देकर कुल चार लाख अठावन हजार रुपए ट्रांसफर किए। जो कि उनके द्वारा दी गई आई डी पर किए गए। पर ये पेमेंट हो जाने के बाद उन्होंने उसको स्टॉक मार्केट के ट्रेड प्रोवाइड किए जिसमें की उसका टोटल नुकसान दस लाख रुपए से अधिक का हुआ। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

फलियां खाने से फूल जाता है पेट और दूध पीकर होता है दर्द? यहां है समस्या का समाधान

दूध, दाल और फलियां जैसी हेल्दी चीजें भी कुछ लोगों को नुकसान पहुंचा सकती हैं। इस बात को जानकर हैरान होने की नहीं बल्कि अपनी जानकारी बढ़ाने की जरूरत है। ताकि आपको पता चल सके कि आखिर आपका पेट इतनी जल्दी-जल्दी क्यों खराब होता है... या हर समय पेट और पॉटी से जुड़ी समस्याएं आपको क्यों घेरे रहती हैं...

हर दिन अलग तरह की पॉटी आना

-अगर आपको पॉटी एक दिन लूज होती है और दूसरे दिन बहुत सख्त। या फिर कभी आराम से पॉटी हो जाती है और कभी बहुत वक्त और मेहनत लगानी पड़ती है... तो यह इस बात का संकेत है कि आपका पेट पाचन संबंधी समस्याओं से परेशान है। -कुछ लोगों को हर दिन पॉटी बहुत लूज होती है और पॉटी करते समय या पॉटी से पहले पेट के निचले हिस्से में हल्का-हल्का दर्द होता है...यह समस्या भी आपके खराब पाचन की तरफ इशारा है।

इन बातों पर करना है गौर

-अगर आप पेट से जुड़ी इस तरह की समस्याओं से परेशान हैं तो सबसे पहला इलाज तो यही है कि आप डॉक्टर से संपर्क करें। यदि दवाइयां लेने के बाद केवल तब तक आराम रहता है, जब तक दवाई का असर रहता है तो आपको सिर्फ दवाओं की नहीं बल्कि अपनी डायट पर नजर डालने की भी जरूरत है। -इस स्थिति में आपके डॉक्टर आपके डायटीशियन के पास जाने की सलाह दे सकते हैं या फिर खुद ही आपको कुछ चीजें खाने और कुछ चीजों का सेवन ना करने की सलाह दे सकते हैं। यहां जानें डायट से जुड़ी बातें...

दूध कर देता है इनका हाजमा खराब

-सबसे पहले बात करते हैं दूध की। दूध एक पौष्टिक आहार है और शरीर में कैल्शियम की कमी को पूरा करता है। साथ ही हमें मेंटली हेल्दी रखने में भी सहायक है। लेकिन कुछ लोगों को दूध से एलर्जी होती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि दूध में पाया जानेवाला लैक्टोस या लैक्टिक एसिड इन लोगों के शरीर में डायजेस्ट नहीं हो पाता है। -इस स्थिति में अगर ये लोग दूध पीते हैं तो या तो इनका पेट गड़बड़ हो जाता है, गैस की समस्या हो सकती है या फिर पॉटी लूज होने लगती है। अगर आपको भी इस तरह की दिक्कतें हो रही हैं तो आप कुछ दिन के लिए अपनी डायट

से दूध और दूध से बनी चीजों को हटाकर देखें। आपको पता चल जाएगा कि आपकी परेशानी की वजह दूध ही है या कुछ और है।

इन लोगों को नहीं पचती हैं दालें

-जैसे कुछ लोगों को दूध से दिक्कत होती है, वैसे ही कुछ लोगों को प्रोटीन डायट से समस्या होती है। यह बिल्कुल उसी तरह हैरान करनेवाला है कि दूध पीकर कोई बीमार कैसे हो सकता है? लेकिन कुछ लोगों के साथ ऐसा होता है। जिन्हें प्रोटीन डायट के पाचन में समस्या आती है, उन्हें अपनी डेली डायट में दालों का उपयोग बहुत सीमित कर देना चाहिए।

फलियां खाकर फूल जाता है इनका पेट-हरी फलियां हमारी सेहत के लिए बहुत जरूरी होती हैं। क्योंक इनसे हमारे शरीर को फाइबर और मिनरल्स की प्राप्ति होती है। लेकिन जिन लोगों को प्रोटीन डायट से एलर्जी होती है, उन्हें खाने में फलियां खाने के बाद समस्या हो जाती है। क्योंकि आमतौर पर फलियां भी प्रोटीन रिच होती हैं। इस स्थिति में आपको फलियों का सेवन बहुत सीमित कर देना चाहिए।

ऐसे समझ सकते हैं आप- जिन लोगों को दालों और फलियों को खाने से दिक्कत होती है, वे अपनी समस्या को इस तरह पहचान सकते हैं कि खाना खाने के तुरंत बाद इन्हें महसूस होता है कि इनका पेट फूल गया है...या ये अचानक मोटे हो गए हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि प्रोटीन डायट लेने के बाद इन लोगों की बॉडी ब्लॉटिंग करने लगती है। -जबकि कुछ लोगों को खाना खाते ही पेट फूलना, गैस बनना और शरीर में भारीपन की शिकायत हो सकती है। इस कारण कुछ लोगों को खाना खाते ही नींद आने लगती है या कुछ लोग बेचैनी का अनुभव कर सकते हैं। जबकि कुछ घंटे बीतने और आराम करने के बाद ये लोग अपने आपको स्लिम और फिट महसूस करते हैं।

क्या हैं इन समस्याओं के समाधान?

-हमारे शरीर के लिए दूध भी जरूरी है, दालें भी और फलियां भी। अगर आपको इनमें से किसी भी चीज से एलर्जी है तो बेहतर रहेगा कि आप अपने डॉक्टर की मदद से इस बात का पता लगाने का प्रयास करें कि आपको होनेवाली इस समस्या की मुख्य वजह क्या है? -डॉक्टर के साथ-साथ आप डायटीशियन की सहायता भी ले सकते हैं। डायटीशियन आपकी समस्याओं को सुनने के बाद आपके हिसाब से डायट चार्ट बनाकर आपको दे देंगे। इससे आपको अपनी समस्या का कारण जानने और उसे दूर करने में आसानी होगी।

जब तक पता ना चले क्या करना है-जब तक आपको पता ना चले कि आपकी समस्या की असली वजह क्या है, तब तक अपनी डायट से किसी भी चीज को पूरी तरह हटाएं नहीं। बल्कि सीमित मात्रा में और जितनी भूख हो उससे थोड़ा कम खाना खाएं।

-दूध, दाल, फलियां आदि में से किस चीज से आपको दिक्कत है, इसका पता चलने के बाद आप अपने डॉक्टर के सुझाव के हिसाब से इनसे मिलने वाले पौषक तत्वों की पूर्ति के लिए सप्लिमेंट्स ले सकते हैं।

घर से पढ़ाई करने पर आपके बच्चे को मिल रहे हैं ये 5 फायदे

कोरोना वायरस की वजह से स्कूलों को बच्चों को घर पर ही पढ़ाने के निर्देश दिए गए हैं। अब बच्चे स्कूल की बजाय घर पर ही पढ़ाई कर रहे हैं। लेकिन कुछ लोगों को लगता है कि बच्चों का स्कूल जाना ही सही रहता है, लेकिन ऐसा नहीं है। अगर बच्चे स्कूल की बजाय घर पर पढ़ाई करें तो इसके भी कई फायदे होते हैं। आज हम आपको इस आर्टिकल के जरिए यही बताने जा रहे हैं कि होम स्कूलिंग से माता-पिता और बच्चों को क्या फायदा मिलते हैं।

बच्चों के साथ ज्यादा समय बिताना

बच्चों के घर पर पढ़ाई करने से पैरेंट्स को उनके साथ समय बिताने का मौका मिल रहा है। हो सकता है कि कुछ माता-पिता को ये ट्रेंड पसंद न आए, लेकिन आपको ये बात समझनी चाहिए कि इससे बच्चा हर वक्त आपकी नजरों के सामने सुरक्षित रहेगा।

अपने पसंदीदा काम करने का समय-अक्सर बच्चे स्कूल से आकर ट्यूशन, योगा क्लास और कई तरह की एक्टिविटीज के लिए चले जाते हैं। अगर आपका बच्चा बहुत छोटा है खासतौर पर प्री-स्कूल के लिए उसकी उम्र अभी कम

है तो आपको होम स्कूलिंग को वरीयता देनी चाहिए। इससे कम उम्र में ही बच्चों पर पढ़ाई का ज्यादा दबाव नहीं पड़ता है। पढ़ाई और कुछ नया सीखने में आप उसकी ज्यादा मदद कर सकते हैं। इसके बाद जो समय बचेगा उसमें बच्चा अपने पसंदीदा काम और खेल सकता है।

परिवार को मिलती है ज्यादा आजादी-सुबह जल्दी उठना, स्कूल के लिए तैयार होना, रास्ते में ट्रैफिक में फंसना और फिर बच्चे को स्कूल से वापस घर लाना और उसके बाद उसे होमवर्क करवाना। इस सबके अंदर ही सारा समय और एनर्जी खर्च हो जाती है। वहीं घर से पढ़ाई करने पर आप इन सब चीजों से बच जाते हैं और स्कूल के नियमों की बजाय अपने परिवार के अनुसार बच्चे को पढ़ा सकते हैं।

बच्चों की पढ़ाई पर रहती है नजर

बच्चे स्कूल में क्या सीख रहे हैं या क्या कर रहे हैं या टीचर उन पर पूरा ध्यान भी देती है या नहीं, इन सब बातों से पैरेंट्स अनजान होते हैं। अगर आपका बच्चा घर से पढ़ाई कर रहा है तो आपको भी उसके साथ बैठकर ये जानने का मौका मिलता है कि वो कैसा स्टूडेंट है।

सुरक्षा मिलती है-बच्चों के साथ होने वाले कई अपराध स्कूल में ही होते हैं और होम स्कूलिंग इस तरह की समस्याओं से आपको बचा देती है। आपका बच्चा अपने परिवार के सदस्यों के बीच रहता और पढ़ाई करता है। घर एवं परिवार के बीच रहने से ज्यादा सुरक्षित जगह शायद ही कोई और होगी। लॉकडाउन और कोरोना की वजह से भले ही स्कूलों ने बच्चों को होम स्कूलिंग देना शुरू कर दिया हो लेकिन इसमें सबसे ज्यादा आपके बच्चे को ही फायदा है। घर पर पढ़ाई करने से उसे ज्यादा समय मिल पाता है और वा अपनी पसंद के काम या खेल को भी टाइम दे पाता है। अब अगर आपको ये होम स्कूलिंग का आइडिया गलत लग रहा था तो जरा अपने विचारों को बदल डालिए, क्योंकि इसके नुकसान से ज्यादा फायदे हैं जो आपके बच्चे को ही मिल रहे हैं।

संतरा से मिलता है सबसे ज्यादा विटामिन डी

विटामिन डी एक ऐसा पोषक तत्व है जो त्वचा के धूप के संपर्क में आने पर बनता है। हमारी हड्डियों, मांसपेशियों और नसों को स्वस्थ रखने के लिए विटामिन डी की जरूरत होती है। यह इम्यून सिस्टम को भी मजबूत करता है। खाद्य पदार्थों और फलों से भी विटामिन डी पाया जा सकता है। आज हम आपको एक ऐसे फल के बारे में बताने जा रहे हैं जिसमें प्राकृतिक रूप से विटामिन डी उच्च मात्रा में पाया जाता है। इस फल को आप बड़ी आसानी से अपने आहार में शामिल कर सकते हैं।

विटामिन डी के फायदे- विटामिन डी लेने से वजन घटाने में मदद मिलती है, डिप्रेशन नहीं होता, हृदय रोगों का खतरा कम हो सकता है। हम सभी जानते हैं कि विटामिन डी हड्डियों को मजबूत करता है। इससे इम्यून सिस्टम भी बेहतर होता है। तंत्रिका तंत्र और मस्तिष्क को स्वस्थ बनाए रखने में भी विटामिन डी अहम भूमिका निभाता है।

विटामिन डी की कमी से क्या नुकसान होता है-अगर आपके शरीर में विटामिन डी की कमी हो जाए तो इंफेक्शन का खतरा बढ़ जाता है या बीमार महसूस होता है। इसमें थकान, हड्डियों और कमर में दर्द, मूड खराब रहना, घाव न भरना, बाल झड़ना, मांसपेशियों में दर्द रहता है। वहीं अगर आप लंबे समय से विटामिन डी की कमी से ग्रस्त हों तो इसकी वजह से कार्डियोवस्कुलर स्थितियां, ऑटोइम्यून समस्याएं, नसों से जुड़े रोग, संक्रमण, प्रेग्नेंसी में समस्याएं और ब्रेस्ट, प्रोस्टेट एवं कोलन जैसे कुछ कैंसर का खतरा बढ़ जाता है।

संतरे का जूस- विटामिन डी से युक्त फलों में से एक संतरा भी है। संतरे का जूस हड्डियों को मजबूत करने वाले खनिज पदार्थों को अवशोषित कर सकता है जो कि शरीर को एनर्जी और मजबूती देने के लिए जरूरी होता है। एक कप संतरे के रस से पर्याप्त मात्रा में विटामिन डी मिल जाता है। संतरा विटामिन सी, फोलेट और पोटैशियम से भी युक्त होता है।

इन चीजों से भी मिल सकता है विटामिन डी-

संतरे के रस के अलावा दही, दूध, साल्मन और ट्यूना मछली एवं अंडे आदि में विटामिन डी प्रचुरता में होता है। अगर आपकी हड्डियां कमजोर हैं या शरीर में विटामिन डी की कमी हो गई है तो आपको अपनी डाइट में इन चीजों को शामिल कर लेना चाहिए।

अपनी पुरानी जींस को फेंकें नहीं, बल्कि बनाएं ये काम की चीजें

अगर आपके पास भी ऐसी जींस है जिसे पहन-पहनकर आप बोर हो गई हैं और अब बस उसे फेंक देना चाहती हैं, तो ऐसा न करें। आपकी पुरानी जींस आपके काफी काम आ सकती है। इससे ऐसी-ऐसी चीजें बन सकती हैं, जिसके बारे में आपने शायद सोचा भी न हो। हम बता रहे हैं आपको ऐसी ही 5 चीजों के बारे में, जिन्हें आप आसानी से अपनी जींस से बना सकती हैं।

वैक्स स्ट्रिप- क्या आप भी घर पर वैक्स करती हैं? अगर हां तो अपनी पुरानी जींस से वैक्स स्ट्रिप तैयार करें। डेनिम फैब्रिक बाकी कपड़ों या मटीरियल के मुकाबले ज्यादा मजबूत होता है, ऐसे में वैक्सिंग की प्रक्रिया भी बेहतर तरीके से पूरी हो जाती है। स्ट्रिप बनाने के लिए एक मेजरिंग टेप, पेन और कैंची ले आएं। आपको जितनी लंबी स्ट्रिप चाहिए उस हिसाब से नाप लेते हुए पैन से मार्क लगा लें। अब इन्हें कैंची से काट लें। वैक्सिंग के बाद इन्हें बस गरम पानी में साबुन के साथ भिगा दें और फिर धो लें। ये फिर से इस्तेमाल करने के लिए रेडी हो जाएंगी।

हेयर बैंड- जींस के घुटने के नीचे के पोर्शन को लें और उसे तीन हिस्सों में काट लें। अब जैसे आप चोटी गूंथती हैं, वैसे ही इन तीनों हिस्सों को गूंथ लें। दोनों एंड्स पर गांठ बांध लें और नीचे ही ओर कुछ खुला हिस्सा रहने दें। इसे बालों पर आगे की ओर लगाएं और पीछे से बचे हुए खुले हिस्से को बांध लें। लीजिए आपका क्यूट सा हेयर बैंड तैयार है।

कप होल्डर- जींस के नीचे के एंड्स को लें और उसे करीब पांच इंच लंबाई में काट लें। अब बचे हुए कपड़े में से दो पतली-पतली, 8-8 इंच लंबी पट्टी काट लें। इन पट्टियों को सुई-धागे की मदद से स्ट्रैप की तरह दूसरे कटे हुए हिस्से से जोड़ लें। इसमें आप आराम से कॉफी कप को फंसा सकेंगी और बिना हाथ जलाए उसे कैरी कर सकेंगी। आप चाहे तो स्ट्रैप अवॉइड भी कर सकती हैं।

पेन होल्डर- कार्डबोर्ड का एक हिस्सा लें और 3 इंच चौड़ाई व 6 इंच लंबाई के चार हिस्से काट लें। इनके कॉर्नर्स को ग्लू से एक-दूसरे से चिपका दें। अब निचले हिस्से का नाप लें और उसके अनुसार बोर्ड का एक और हिस्सा काट लें। इसे चारों पीस के लोअर पोर्शन से चिपका दें। अब जींस लें और कार्डबोर्ड से बने होल्डर के नाप से उसके फैब्रिक को काट लें। इसे फैब्रिक ग्लू या फेविकोल से कार्डबोर्ड पर चिपका दें। नीचे व ऊपर के छोरों पर लेस लगाएं और बस प्रिटी पेन होल्डर रेडी है।

किचन क्लोद- ये मेथड तो सबसे सिंपल है। इसमें आपको ज्यादा कुछ नहीं बस जींस के ब्रॉड हिस्सों को बराबरी में काट लेना है और उसके एंड्स को ट्रिम कर लेना है। इसे किचन की अलमीरा में रखें और जब प्लैटफॉर्म पर कुछ गिर जाए, तो इसका इस्तेमाल करें। यकीन मानिए कॉटन से ज्यादा बेहतर सफाई डेनिम करता है और यह ज्यादा वॉश से जल्दी खराब भी नहीं होता।

मिर्जा गालिब- शायरी और गजल के शिखर फनकार थे

ललित गर्ग

मिर्जा असदुल्लाह बेग खान, जो अपने तख़ल्लुस गालिब से जाने जाते हैं, उर्दू एवं फ़ारसी भाषा के एक महान शायर थे। इनको उर्दू भाषा का सर्वकालिक एवं सार्वदेशिक महान शायर माना जाता है और फ़ारसी कविता के प्रवाह को हिन्दुस्तानी जबान में लोकप्रिय बनाने वाले वे एक महान् फ़नकार थे। हर मोहब्बत करने वाला आशिक मिर्जा गालिब के शेर, शायरी और गजल जरूर पढ़ता है। हर कोई उनकी शायरी का कायल है। मिर्जा गालिब सर्व-धर्म-सद्भाव एवं मानवीय चेतना के चितेरे थे एवं गहन संवेदनाओं के शिखर सृजनकार थे। गालिब का व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक एवं बहुआयामी था। गालिब में जिस प्रकार शारीरिक सौंदर्य था, उसी प्रकार उनकी प्रकृति में विनोदप्रियता तथा वक्रता भी थी और ये सब विशेषताएं उनकी कविता एवं शायरी में यत्र-तत्र झलकती रहती हैं। चिन्ताओं से संघर्ष में इनकी सहायक एक तो थी शराब, जिन्दगी के अंतिम समय में जुए की लत भी लग गई। उन्हें शुरू से शतरंज और चौसर खेलने की आदत थी। अक्सर मित्र-मण्डली जमा होती और खेल-तमाशों में वक्त कटता था। अपने मदिरा प्रेम के कारण जो भाव प्रकट किए हैं, वे शेर ऐसे चुटीले तथा विनोदपूर्ण हैं कि उनका जोड़ उर्दू कविता में अन्यत्र नहीं मिलता। गालिब ने शायरी और गजल को एक नया रूप दिया। गालिब के पहले गजल को केवल प्रेम के संदर्भ में देखा जाता है लेकिन उन्होंने गजल में ही जीवन के दर्शन और रहस्यों को दर्शाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी शायरी के कारण वे न सिर्फहिन्दुस्तान बल्कि पूरी दुनिया में मशहूर हैं। आज भी उनका नाम बड़े अदब के साथ लिया जाता है। गालिब की प्रारम्भिक शिक्षा के बारे में स्पष्टतः कुछ कहा नहीं जा सकता। उन्होंने अधिकतर फ़ारसी और उर्दू में पारम्परिक मानवीयता, भक्ति और सौन्दर्य रस पर रचनायें लिखी। उन्होंने फ़ारसी और उर्दू दोनो में पारंपरिक गीत काव्य की रहस्यमय-रोमांटिक शैली में सबसे व्यापक रूप से लिखा और यह गजल के रूप में जाना जाता है। उनकी शायरियों में गहन साहित्य और क्लिष्ट भाषा का समावेश था। उन्होंने अपनी शायरी का बड़ा हिस्सा असद के नाम से लिखा है। गालिब हिंदुस्तान में उर्दू अदबी के दुनिया के सबसे रोचक किरदार थे। उनकी जड़ें तुर्क से थीं। वे फ़ारसी कविता को भारतीय भाषा में लोकप्रिय करने में माहिर थे, उन्हें पत्र लिखने का बहुत शौक था। इसीलिए उन्हें पत्र-पुरोधा भी कहा जाता था। आज भी उनके पत्रों को उर्दू साहित्य में एक अहम विरासत माना जाता है। मिर्जा गालिब ने 11 वर्ष की छोटी उम्र में ही अपनी पहली कविता लिखी थी। मिर्जा गालिब की मातृभाषा उर्दू थी लेकिन तुर्की और फ़ारसी भाषाओं पर भी उनकी अच्छी पकड़ थी। उन्होंने अरबी, फ़ारसी, दर्शन और तर्कशक्ति का भी अध्ययन किया था।

गालिब इश्क को जीते थे। वह इश्क का आखिरी छोर थे। उनकी नज़्में और शेर ने सालों साल इश्क की तहजीब दुनिया को दी है। अगर हम यूं कहें कि इश्क गालिब से शुरू होता है तो यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं होगी। उनका हर शेर एक जिंदादिल आशिक की तरह इश्क की रस्मों को निभाता है। उनका जीवन संघर्ष से भागते या पलायन करते हुए नहीं बिता और न इनकी कविता एवं शायरी में कहीं निराशा का नाम है। वह इस संघर्ष को जीवन का एक अंश तथा आवश्यक अंग समझते थे। मानव की उच्चता तथा मनुष्यत्व को सब कुछ मानकर उसके भावों तथा विचारों का वर्णन करने में वह अत्यन्त निपुण थे और यह वर्णनशैली ऐसे नए ढंग की है कि इसे पढ़कर शताब्दियों बाद भी पाठक मुग्ध हो जाता है। मिर्जा का जीवन अनेक विलक्षणताओं एवं विशेताओं का समवाय था। उनके विषय में पहली बात तो यह है कि वह अत्यन्त शिष्ट, शालीन एवं मित्रप्रेमी थे। जो कोई उनसे मिलने आता, उससे खुले दिल से मिलते थे। इसीलिए, जो आदमी एक बार इनसे मिलता था, उसे सदा इनसे मिलने की इच्छा बनी रहती थी। मित्रों के प्रति अत्यन्त वफ़ादार थे। उनकी खुशी में खुशी, उनके दु:ख में दु:खी। मित्रों को देखकर बाग-बाग हो जाते थे। उनके मित्रों का बहुत बड़ा दायरा था। उसमें हर जाति, धर्म और प्रान्त के लोग थे। वैसे वे शिया मुसलमान थे, पर मजहब की भावनाओं में बहुत उदार और स्वतंत्र चेता थे। गालिब सदा किराये के मकानों में रहे, अपना मकान न बनवा सके। ऐसा मकान ज्यादा पसंद करते थे, जिसमें बैठकख़ाना जरूर हो और उनके दरवाजे भी अलग हों, जिससे यार-दोस्त बेझिझक आ-जा सकें। खाने-खिलाने के शौकीन, स्वादिष्ट व्यंजनों के प्रेमी थे। उन्हें हम स्नेह एवं मित्रता की छांह देने वाले बरगद कहे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। हर जुबां का वो आसरा...उसके दिल में धड़कता था आगरा... उनका जन्म आगरा में 27 दिसंबर 1797 को एक सैनिक पृष्ठभूमि वाले परिवार में हुआ था। उनका पूरा बचपन ताजनगरी में ही बीता। गालिब की पृष्ठभूमि एक तुर्क परिवार से थी और इनके दादा मिर्जा कोबान बेग खान मध्य एशिया के समरकन्द से सन् 1750 के आसपास अहमद शाह के शासन काल में भारत आये। उन्होंने दिल्ली, लाहौर व जयपुर में काम किया और अन्ततः आगरा में बस गये। जवानी के दहलीज पर कदम रखते ही वह दिल्ली चले आए। यहां जाने के बाद भी ताउम्र मिर्जा गालिब के दिल व दिमाग में आगरा छाया रहा। आगरा में गालिब के जन्मस्थान को इन्द्रभान कन्या अन्तर महाविद्यालय में बदल दिया गया है, जिस कमरे में गालिब का जन्म हुआ था उसे आज भी सुरक्षित रखा गया है। दिल्ली के चांदनी चौक के बल्लीमारान इलाके के कासिम जान गली में स्थित गालिब के घर को गालिब मेमोरियल में तब्दील कर दिया गया। बहादुर शाह जफ़र द्वितीय ने 1850 ई. में गालिब को दबीर-उल-मुल्क और नज़्म-उद-दौला की उपाधि प्रदान की थी। इसके अलावा बहादुर शाह जफ़र द्वितीय ने गालिब को मिर्जा नोशा की उपाधि प्रदान की थी, जिसके बाद गालिब के नाम के साथ मिर्जा शब्द जुड़ गया। तबियत से खुद एक शायर बहादुर शाह जफ़र द्वितीय ने कविता सीखने के उद्देश्य से 1854 में गालिब को अपना शिक्षक नियुक्त किया था। बाद में बहादुर शाह जफ़र ने गालिब को अपने बड़े बेटे शहजादा फ़खरूद्दीन मिर्जा का भी शिक्षक नियुक्त किया था। इसके अलावा गालिब मुगल दरबार में शाही इतिहासविद के रूप में भी काम करते थे। साल 1847 में जुआ खेलने के जुर्म में गालिब को जेल भी जाना पड़ा था और उन्हें 200 रुपए जुर्माना और सश्रम कारावास की सजा दी गई थी। एक मुसलमान होने के बावजूद गालिब ने कभी रोजा नहीं रखा। मुसलमान होने के प्रश्न पर एक अंग्रेज कर्नल को जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि मैं आधा मुसलमान हूं। ये जवाब सुनकर अंग्रेज कर्नल ने अगला सवाल दागा और पूछा कि ऐसा कैसे कि आप आधे मुसलमान हैं? इसके जवाब में मिर्जा गालिब ने कहा, हां, क्योंकि मैं शराब तो पीता हूं लेकिन सुअर नहीं खाता। मिर्जा गालिब का यह जवाब सुनकर अंग्रेज कर्नल अपनी हंसी नहीं रोक पाया। एक बार गालिब आम खा रहे थे। जमीन पर छिलके जमा कर रखे थे। वहां खड़े एक व्यक्ति ने उन छिलकों को अपने गधे को खाने के लिए दिया। गधे ने उन छिलकों को खाने से इंकार कर दिया। इस पर सज्जन व्यक्ति ने गालिब का मजाक उड़ाते हुए कहा कि 'गधे भी आम नहीं खाते हैं।' इस पर गालिब ने अपनी हाजिर जवाबी का परिचय देते हुए कहा कि 'गधे ही आम नहीं खाते हैं।' मिर्जा गालिब का एक बहुत मशहूर शेर है 'ये इश्क नहीं आसान, बस इतना समझ लीजिये, इक आग का दरिया है और डूबकर जाना है।' न जाने गालिब ने किन परिस्थितियों में ये शेर गढ़ा होगा। लेकिन ऐसा लगता है कि इश्क पर जो पहरा उस सदी में था वह आज इक्कीसवीं सदी के ग्लोबल इंडिया में भी है। जिंदगी जीने के तमाम तरीके भले ही बदल गए हों, लेकिन प्यार मोहब्बत को देखने का हमारा पारिवारिक-सामाजिक-धार्मिक नजरिया आज भी सदियों पुराना है। मिर्जा गालिब ने बेहतरीन शेर लिखे हैं- इस सादगी पे कौन न मर जाए ऐ खुदा, लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं। दरअसल मिर्जा गालिब अपनी हाजिर जवाबी के लिए मशहूर थे। इस दौरान भी इश्क ने 'गालिब' निकम्मा कर दिया, वर्ना हम भी आदमी थे काम के। मौत का एक दिन मुअय्यन है, नींद क्यूं रात भर नहीं आती... । गालिब की जिंदगी संघर्षों से भरी रही, उन्होंने अपनी जिंदगी में अपने कई अजीजों को खोया। अपनी जिंदगी गरीबी में गुजारी। इसके बावजूद गालिब के शेर ने लोगों के दिलों को छुआ। गालिब 15 फ़रवरी 1869 को इस दुनिया से अलविदा कह गए।

सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल या लूट का अड्डा

निर्मल रानी

वैसे तो 2012 में प्रसारित किये गये आमिर खान के प्रसिद्ध व लोकप्रिय धारावाहिक सत्यमेव जयते में भारतीय स्वास्थ्य सेवाओं में व्याप्त धांधली व लूट जैसे अति गंभीर विषय को अत्यंत प्रभावी रूप से उठाया जा चुका है। इस में प्रमाणिक तरीके से यह बताया गया था कि किस प्रकार डॉक्टर्स द्वारा मरीजों को बिना जरुरत के दवाइयाँ दी जाती हैं और किस तरह मरीजों का गैर जरूरी इलाज किया जाता है। इसमें कई ऐसे उदाहरण पेश किये गये थे जिससे यह साबित होता है कि स्वास्थ्य सेवाओं में किस तरह की धांधलियां हो रही हैं। सत्यमेव जयते में यह भी दिखाया गया था कि आंध्र प्रदेश के एक गाँव में बड़ी संख्या में महिलाओं की बच्चेदानी (गर्भाशय) निकाल दिया गया, जबकि इसकी जरुरत ही नहीं थी। डॉक्टर्स द्वारा महिलाओं को यह बताया गया था कि अगर उन्होंने ऑप्रेशन नहीं करवाया तो उनकी जान चली जाएगी। जब कि इस कार्यक्रम में भाग ले रही एक सीनियर डॉक्टर का कहना था कि कैंसर के अलावा कोई और मामला नहीं होता जिसमें गर्भाशय को निकालना पड़े। इसी मंच पर यह भी बताया गया था कि कई बार मरीजों से दवाओं की कीमत पचास गुना ज्यादा तक वसूली जाती है। तरह तरह के गैर जरूरी फ़र्ज़ी टेस्ट करने के लिए मरीज पर दबाव बनाने जैसी अनेक बातें भी सामने आयी थीं। यहाँ तक कि सत्यमेव जयते में डॉक्टरों के व्यवसाय से लेकर मेडिकल कॉलेजों तक सभी पर निगरानी रखने वाली संस्था मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया (एमसीआई) की गड़बड़ियों पर भी चर्चा की गई थी।

परन्तु सत्यमेव जयते द्वारा भारतीय चिकित्सा व्यवस्था में व्याप्त घोर भ्रष्टाचार व लूट के उजागर होने के बावजूद गत 12 वर्षों में इसमें कोई सुधार तो बिल्कुल नहीं आया,हाँ लूट खसोट में और अधिक इजाफ़ा जरूर हो गया है। और भारतीय चिकित्सा व्यवस्था में व्याप्त यह लूट अब इस हद तक पहुँच चुकी है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। सीधे शब्दों में मरीज को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ देने के बारे में तो कतई नहीं बल्कि उससे कितने अधिक से अधिक पैसे वसूले जा सकते हैं सारा ध्यान व अस्पतालों का सारा चक्रव्यूह इसी तरीके से रचा जा रहा है। और ऐसा हो भी क्यों न ? जब सुपर-स्पेशलिटी हॉस्पिटल, फ़ार्मा और हेल्थकेयर कम्पनीज द्वारा सत्ता को चुनावी बांड के रूप में इतने पैसे दे दिए जायें कि उनकी हर तरह की लूट पर सरकारें खामोश रहें? गौरतलब है पिछले दिनों जब सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश पर इलेक्टोरल बांड सार्वजनिक किये गए थे उन्हीं चुनावी बॉन्ड के आंकड़ों से पता चला था कि देश की कम से कम 30 फ़ार्मा और हेल्थकेयर कंपनियों ने 5 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के चुनावी बॉन्ड खरीदे थे जो कुल मिलाकर लगभग 900 करोड़ रुपये है। यह कुल 12,155 करोड़ रुपये की राशि का लगभग 7.4: है, जिसके लिए डेटा जारी किया गया था। नतीजतन आज सुपर-स्पेशलिटी हॉस्पिटल,फ़ार्मा और हेल्थकेयर फ़र्मों को इस बात की पूरी छूट मिल चुकी है कि वे मरीज की आर्थिक स्थिति के अनुसार जितना चाहे उसका दोहन कर सकते हैं करें। इनको मिली इस शाह का नतीजा है कि आज देश में प्रायः 44: ऐसी झूठी सर्जरी की जा रही हैं जिनकी जरुरत ही नहीं। करीब 55: गैर जरूरी हार्ट सर्जरी,लगभग 48: गर्भाशय सर्जरी करीब 47: कैंसर सर्जरी,48: घुटना बदलने वाली शल्य चिकित्सा 45: प्रसव सर्जरी केवल धन ऐंठने हेतु पूरी तरह अकारण ही की जा रही हैं। यह कोई गढ़े हुये काल्पनिक आंकड़े नहीं बल्कि मार्च 2016 को भारत की एक संसदीय समिति द्वारा स्वीकार किये गये तथ्य हैं। सत्ता संरक्षित इन अस्पतालों को भी पूरी तरह से कॉर्पोरेट कम्पनी की ही तरह टारगेट आधारित व्यवसाय बना दिया गया है। अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिये हर महीने के अंत में इन डॉक्टर्स पर दबाव बढ़ता है और डॉक्टर्स को व्क्क् के मरीजों को भी अकारण शल्य चिकित्सा (सर्जरी) की तरफ धकेलना पड़ता है। यूँही नहीं कई बड़े नामी सुपर-स्पेशलिटी हॉस्पिटल अपने सीनियर डॉक्टर्स को एक करोड़ रूपये प्रति माह तक तनख्वाह देते हैं। इसके बदले में इन्हें प्रत्येक माह एक हजार सामान्य मरीजों को गंभीर मरीज में परिवर्तित करना होता है। ऐसे लूट एक्सपर्ट डॉक्टर्स का ट्रैक रिकार्ड बनता है कि वह मरीजों को लूटने का कितना एक्सपर्ट है उसके हिसाब से ही उसे दूसरे लुटेरे अस्पतालों में मरीजों को लूटने का ठेका यानी नौकरी मिलती है।

कई मामले ऐसे भी सामने आये हैं जिसमें मृत हो चुके मरीजों को भी जिंदा बताकर पैसे वसूले जाते रहे हैं। अस्पताल द्वारा मृत हो चुके मरीजों का इलाज जारी रखने का केवल नाटक चलता है ताकि जितना हो सके पैसे ऐंठे जाते रहें। ऐसे कई मामले अखबारों में भी आते रहते हैं। ब्रेन डेड मरीजों को एक महीना वेंटिलेटर पर रखने जैसा एक अस्पताल का मामला अदालत में साबित हुआ तो अदालत ने सिर्फ5 लाख की सांत्वना राशि का जुर्माना उस अस्पताल पर ठोक दिया। इन्हीं भारतीय स्वास्थ्य सम्बन्धी अनियमिताओं के चलते पिछले दिनों मेरे एक पारिवारिक सम्बन्ध रखने वाले संपन्न,शिक्षित व अप्रवासी भारतीय परिवार की एक 76 वर्षीय महिला की समय पूर्व जान चली गयी। मरीज के शरीर में इस आयु में चौथे चरण का अग्न्याशय का कैंसर(चंदबतमंजपब ब्ंदबमत) चिन्हित किया गया। उसी समय चंडीगढ़ में एक वरिष्ठ कैंसर विशेषज्ञ ने यह घोषित कर दिया कि मरीज अधिकतम एक वर्ष की आयु और जी सकता है। अमेरिका में मरीज के करीबी रिश्तेदार जोकि स्वास्थ्य विभाग में ही शोधार्थी है तथा उच्च पद पर कार्यरत हैं जब उन्हें इस घटनाक्रम का पता चला तो उन्होंने भी इस उम्र में किसी भी कीमियो थेरेपी की कोशिश से मन किया साथ यह भी कहा की अमेरिका में इस उम्र में कीमियो की सलाह नहीं दी जाती।

परन्तु जब यही मरीज मोहाली के एक नामी सुपर-स्पेशलिटी हॉस्पिटल में भर्ती किया गया तो वहाँ के नेटवर्क ने किसी दूरदर्शिता की बात करने या संभावित खतरों की फ़िक्र या उससे आगाह किये बिना कीमियो कर डाला। जिससे मरीज के शरीर में जॉन्डिस फ़ैल गया। और इस अनावश्यक कीमियो के सप्ताह भर के भीतर ही वह मरीज चल बसा जोकि बिना कीमियो के एक साल जी सकता था। देश में ऐसे हजारों मामले रोजाना होते रहते हैं मगर सत्ता संरक्षित होने के कारण इनका कोई कुछ बिगाड़ नहीं पाता। लूट का अड्डा बनते जा रहे ऐसे सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल का तो लाइसेंस ही निलंबित कर दिया जाना चाहिये।

कैसी होगी कुम्भ के बाद की राजनीति?

राकेश अचल

जाते हुए साल की राजनीति के कुम्भ में डुबकी लगाने वाले भारत देश में राजनीति कितनी बदली ये सभी ने देख लिया है। अब नए साल में प्रयाग में होने वाले कुम्भ के आयोजन से देश की राजनीति कितनी प्रभावित होगी कहना कठिन है। प्रयागराज में 13 जनवरी 2025 से महाकुंभ शुरू होने जा रहा है। आम धारणा है कि महाकुंभ के दौरान संगम में स्नान करने से पुण्यकारी फलों की प्राप्ति होती है। महाकुंभ समाप्त 26 फरवरी 2025 को होगा। महाकुम्भ के लिए उत्तरप्देश की सरकार की प्रतिष्ठा दांव पर लगी हुई है।

उत्तर प्रदेश धार्मिक गतिविधियों का नाभि केंद्र तो है ही साथ ही राजनीति का भी नाभि केंद्र है । देश का मुखिया बनने के लिए मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी को बह इसी उत्तर प्रदेश में आना पड़ा था। इसी उत्तर प्रदेश ने 2014 और 2019 में भाजपा को चुनावी वैतरणी पार कराई थी और इसी उत्तर प्रदेश ने 2024 में भाजपा की नाव को डुबो भी दिया था ,फलस्वरूप देश के हिस्से में एक लंगड़ी सरकार आयी। उत्तर प्रदेश में राम मंदिर तो भाजपा को 400पार नहीं करा पाया लेकिन अब देखना ये है कि महाकुम्भ भाजपा को दिल्ली जितवा सकता है या नहीं ?

अजीब संयोग है कि नए साल में महाकुम्भ और दिल्ली विधानसभा के चुनाव होने हैं। दिल्ली में आम आदमी पार्टी पिछले 12 साल से सत्ता में है। भाजपा ने देश की सत्ता तो तीसरी बार हासिल कर ली लेकिन खास दिल्ली की सत्ता आज भी भाजपा के लिए एक ख्वाब ही है। भाजपा को महाकुम्भ के जरिये अपने हिंदुत्व के एजेंडे को और मारक हथियार बनाकर दिल्ली की सत्ता हासिल करना है। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार देश की लंगड़ी सरकार की मदद से महाकुम्भ के जरिये पुण्य अर्जित करना चाहती है ,लेकिन गंगा में निर्मल जल ही नहीं है।

महाकुंभ के दौरान गंगा और यमुना नदियों में बगैर शोधित मल और जल यानी अनट्रीटेड वाटर छोड़े जाने से रोकने और गंगा जल की पर्याप्त उपलब्धता की मांग को लेकर दाखिल याचिकाओं पर नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल नई दिल्ली ने बेहद महत्वपूर्ण फैसला सुनाया है। एनजीटी ने केंद्र व यूपी सरकार से कहा है कि महाकुंभ के दौरान प्रयागराज में गंगाजल की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जाए. इसके साथ ही साथ ही गंगाजल की क्वालिटी पीने-आचमन करने और नहाने योग्य भी होनी चाहिए। एनजीटी ने अपने फैसले में कहा है कि महाकुंभ के दौरान जो भी श्रद्धालु आस्था की डुबकी लगाने के लिए प्रयागराज आएं. उन्हें गंगाजल को लेकर कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए. गंगा में आस्था की डुबकी लगाने पर श्रद्धालुओं की सेहत पर कोई खराब असर कतई नहीं पड़ना चाहिए। प्रयाग में कुम्भ का आयोजन कब से हो रहा है इसका कोई लिखित प्रमाण नहीं है किन्तु ये एक सनातन आयोजन है। और बिना किसी के सहयोग से होता आ रहा है । ये तब भी सम्पन्न हुआ ,जब देश में मुगलों का शासन था और ये तब भी हुआ जब देश में अंग्रेजों का शासन था। आजादी के बाद से इस आयोजन को राजसत्ता की प्रत्यक्ष मदद मिलने लगी लेकिन देश की राजनीति में जब से भाजपा का जन्म हुआ है और भाजपा उत्तर प्रदेश की सत्ता में आई है तब से कुम्भ का आयोजन धार्मिक के साथ ही राजनीतिक आयोजन भी ही गया है। यानि अब महाकुम्भ के माध्यम से राजनीतिक लक्ष्य भी साधे जाने लगे हैं। इस साल उत्तर प्रदेश सरकार के कन्धों पर कुम्भ के जरिये दिल्ली की सत्ता हासिल करने का लक्ष्य है। भाजपा के लिए ये बड़ा लक्ष्य है।

आपको बता दें कि प्रयागराज का कुम्भ 14 जनवरी से 10 मार्च 2013 के बीच आयोजित किया गया। यह कुल 55 दिनों के लिए था, इस दौरान इलाहाबाद (प्रयागराज) सर्वाधिक लोकसंख्या वाला शहर बन जाता है। 5 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में 8 करोड़ से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया था। आंकड़ों के हिसाब से ये दुनिया का सबसे बड़ा जमावड़ा है ,लेकिन आबादी की दृष्टि से देखें तो 144 करोड़ के इस देश में से 1 प्रतिशत आबादी भी कुम्भ नहीं पहुँच पाती।कुम्भ के मेले एक तरफ सद्भाव के केंद्र भी बनते हैं तो अतीत में ये पारस्परिक संघर्ष के साक्षी भी रहे हैं। 1690 में नासिक में शैव और वैष्णव साम्प्रदायों में संघर्ष 60,000 लोग मारे गए थे। 1760 – शैवों और वैष्णवों के बीच हरिद्वार मेलें में संघर्ष 1,800 मरे।1820 के हरिद्वार मेले में हुई भगदड़ से 430 लोग मारे गए। भगदड़ की अनेक घटनाएं कुम्भ के मेलों में हो चुकी हैं।

पिछले एक दशक में भाजपा ने देश के अनेक धार्मिक आयोजनों को धार्मिक पर्यटन मेलों में बदल दिया है। प्रयाग का तो नाम तक बदल दिया गया। पहले प्रयाग को अल्लाहाबाद बनाया गया ,फिर इलाहबाद और अब एक बार फिर प्रयाग बना दिया गया है। भाजपा एक बार फिर से महाकुम्भ के जरिये पुण्य के साथ सत्ता सुख भी हासिल करना चाहती है। अयोध्या में राम मंदिर भाजपा को पिछले आम चुनाव में अपेक्षित लाभ नहीं दिला पाया ,लेकिन भाजपा को उम्मीद है की कुम्भ के जरिये 2024 में हुए घाटे को पूरा किया जा सकेगा।

छत्तीसगढ़ में धान खरीदी, सियासी संघर्ष और किसानों की चिंताएं

छत्तीसगढ़ में धान खरीदी को लेकर सियासी घमासान चरम पर है। किसानों के मुद्दों को लेकर कांग्रेस और भाजपा एक-दूसरे पर तीखे आरोप-प्रत्यारोप कर रहे हैं। वहीं, किसान संगठन भी अपनी समस्याओं और मांगों को लेकर मुखर हैं। यह मुद्दा प्रदेश की राजनीति में एक बड़ा विमर्श बन गया है।

कांग्रेस ने भाजपा सरकार पर धान खरीदी में अव्यवस्था का आरोप लगाते हुए इसे किसानों के साथ धोखा करार दिया है। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि बेमेतरा जिले में अधिकांश धान खरीदी केंद्र बंद पड़े हैं। उन्होंने कहा, विधानसभा में भाजपा सरकार यह दावा करती है कि धान खरीदी की व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है, लेकिन जमीनी स्तर पर सच्चाई कुछ और ही बयां कर रही है कई जगहों पर किसानों को परेशान किया जा रहा है और धान खरीदा ही नहीं जा रही है । वहीं कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने भी भाजपा पर किसानों की समस्याओं को नजरअंदाज करने का आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा सरकार केवल कागजों पर धान खरीदी का दिखावा कर रही है। किसानों की परेशानियों और खरीदी केंद्रों में हो रही अव्यवस्था को भाजपा नेता देख ही नहीं पा रहे हैं। इन सब बयानों को भाजपा ने नकारते हुए इसे विपक्ष की राजनीति बताया है।

भाजपा के महामंत्री संजय श्रीवास्तव ने कहा कि कांग्रेस केवल अपने अस्तित्व को बचाने के लिए एक कृत्रिम समस्या खड़ी कर रही है। वह किसानों के नाम पर राजनीति करने में जुटी हुई है। वहीं केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू ने कांग्रेस के शासनकाल पर ही सवाल उठा दिया है उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार ने अपने समय में किसानों के लिए कुछ नहीं किया। अब वे सिर्फकिसानों के नाम पर केवल आरोप लगाने का काम कर रहें हैं। धान खरीदी को लेकर किसानों के बीच नाराजगी बढ़ रही है। किसान संगठनों ने टोकन व्यवस्था और बारदाने की कमी को लेकर सरकार से सवाल उठा दिया हैं। भारतीय किसान यूनियन के महासचिव तेजराम विद्रोही ने भाजपा पर आरोप लगाते हुए कहा कि धान खरीदी केंद्रों में टोकन जारी करने में गड़बड़ियां हो रही हैं। बारदाने की कमी के कारण किसानों को समय पर धान बेचने में दिक्कतें हो रही हैं। केंद्र सरकार द्वारा समर्थन मूल्य में की गई वृद्धि का लाभ भी किसानों तक नहीं पहुंच रहा है। वहीं संयुक्त किसान मोर्चा के प्रवक्ता वेगेंद्र ने धान खरीदी की सीमा बढ़ाने की मांग करते हुए कहा कि किसानों को राहत देने के लिए समिति में धान खरीदी की सीमा बढ़ाई जानी चाहिए।

वर्तमान सीमा से किसानों को नुकसान हो रहा है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने इन सब आरोपों का खंडन करते हुए कहा कि धान खरीदी की प्रक्रिया पूरी तरह से सुचारू है। उन्होंने कहा कि विपक्ष केवल राजनीति कर रहा है। किसानों के हित में हमारी सरकार ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं और धान खरीदी की व्यवस्था को बेहतर बनाया है।

छत्तीसगढ़ में धान खरीदी का मुद्दा न केवल किसानों के जीवन और प्रदेश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर रहा है, बल्कि यह राज्य की राजनीति के केंद्र भी है। सियासी दलों के बीच आरोप-प्रत्यारोप की इस लड़ाई में सबसे ज्यादा नुकसान किसानों को उठाना पड़ रहा है। आने वाले समय में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि सरकार इस जटिल समस्या का समाधान कैसे करती है। क्या किसानों को उनकी मेहनत का पूरा फल मिलेगा, या यह विवाद केवल राजनीतिक मंचों तक ही सीमित रहेगा? फिलहाल, छत्तीसगढ़ के किसानों को राहत दिलाने और धान खरीदी प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

ईश्वर के दर्शन

सरस्वती चंद्र तीर्थयात्रा पर जा रहे थे। लंबे और कठिन सफर को देखते हुए साथ में बर्तन, भोजन और जरूरत का अन्य सामान भी था। रास्ते में एक गांव पार करते हुए वह वहां के एक वीरान मंदिर में रुक गए। पहले तो सोचा कि यहां कोई नहीं होगा पर मंदिर के अंदर गए तो देखा एक बीमार वृद्ध कराह रहे हैं। उनकी हालत देख लगता था कि उन्होंने काफी दिनों से कुछ खाया न हो। सरस्वती चंद्र को उन पर दया आ गई। उन्होंने कुछ समय वहीं रुककर उनकी सेवा करने का फैसला किया। उन्होंने अपने कपड़े उस वृद्ध सज्जन को पहना दिए। अपने सारे बर्तन मंदिर के उपयोग के लिए रख दिए। अपना भोजन भी उन्हें खिला दिया। फिर आसपास से फल और कुछ औषधियां ले आए। खाली समय में सरस्वती चंद्र मंदिर की सफाई में लगे रहते। इस तरह मंदिर का कायाकल्प हो गया। इधर वृद्ध सज्जन धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगे। कुछ दिनों के बाद सरस्वती चंद्र बिना तीर्थधाम गए ही घर वापस आ गए।

गठबंधन में अकेली होती कांग्रेस

सुरेश हिंदुस्तानी

वर्तमान समेत में भारत की राजनीति निश्चित ही अनिश्चितता का एक ऐसा खेल है, जिसका सीधा सा आशय नहीं निकाल सकता। यानि जो दिखता है, वैसा होता नहीं है और जो हो जाता है, वह दिखता नहीं है। इसी कारण से कभी कभी राजनीति से अविश्वास भी होने लगता है। यह अविश्वास केवल जनता के मन में उपजता है, ऐसा नहीं है, राजनीति के ज्ञाता भी इसकी परिधि में गाहे बगाहे आ जाते हैं। आज के दौर में कांग्रेस के प्रति भी अविश्वास का भाव लगातार बढ़ता जा रहा है।

वर्तमान केंद्र सरकार पर निरंतर हमालवर रहने वाले इंडी गठबंधन के राजनीतिक दल आज स्वयं के लिए अलग मार्ग तलाश करते हुए दिखाई दे रहे हैं। कोई दल कांग्रेस को भाव देने को तैयार नहीं है, लेकिन समस्या यह है कि कांग्रेस आज भी इस सच को आईने में देखने को तैयार नहीं है। आज कांग्रेस की सत्यता यही है कि उसे अपनी विरासत पर ही भरोसा है, इसके अलावा अन्य राजनेता भले ही बड़े पद पर पहुँच जाए, लेकिन उसको जितना महत्व मिलना चाहिए उतना मिलता नहीं है। वर्तमान में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे कमोवेश ऐसी ही स्थिति का सामना कर रहे हैं। वे सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका वाड्रा के समक्ष लगभग नतमस्तक से ही दिखाई देते हैं। पिछले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को जो सफलता मिली, उसे कांग्रेस भले ही सफल बताने का प्रयास करे, लेकिन वह सफलता इसलिए नहीं मानी जा सकती, क्योंकि यह कांग्रेस की अपनी स्वयं की राजनीतिक ताकत नहीं थी, इसमें इंडी गठबंधन के दलों का योगदान था। उत्तरप्रदेश के लोकसभा चुनावों में विपक्षी दलों को निश्चित ही अपेक्षित सफलता मिली, लेकिन इसे कांग्रेस की सफलता नहीं माना जा सकता। अगर कांग्रेस के साथ समाजवादी पार्टी नहीं होती तो कांग्रेस की इतनी सीटें नहीं आती। सत्य यही है कि आज कांग्रेस बिना गठबंधन के आगे बढ़ नहीं सकती, लेकिन कांग्रेस के नेताओं का व्यवहार ऐसा है कि वही सबका नेतृत्व कर रहे हैं, जबकि वास्तविकता में ऐसा नहीं है। इसी कारण इंडी गठबंधन में दरार पैदा करने वाले स्वर भी सुनाई देने लगे हैं। राजनीतिक आकलन किया जाए तो इन स्वरों के यही निहितार्थ निकल सकते हैं कि कांग्रेस के पास इंडी गठबंधन को नेतृत्व देने का सामर्थ्य नहीं है। पश्चिम बंगाल में अपने राजनीतिक कौशल का लगातार परिचय देने वाली तृणमूल कांग्रेस की नेता ममता बनर्जी इंडी गठबंधन का नेतृत्व करने के लिए व्याकुल दिखाई दे रही हैं। ममता बनर्जी की राजनीति को देखते हुए यही कहा जा सकता है कि वे किसी और के नेतृत्व में काम करने के लिए सहज नहीं है। इसलिए उन्होंने यह स्वयं ही कहा है कि अगर कांग्रेस चाहे तो तृणमूल कांग्रेस गठबंधन का नेतृत्व करने के लिए तैयार हैं। इसका आशय पूरी तरह से स्पष्ट है कि कांग्रेस में अब नेतृत्व करने की शक्ति नहीं बची है। हर जगह से कांग्रेस को आइना दिखाने का क्रम प्रारम्भ हो चुका है, लेकिन कांग्रेस में तो केवल और केवल इसी बात की राजनीति की जा रही है कि राहुल और प्रियंका को कैसे स्थापित किया जाए। इसी के चलते कांग्रेस अन्य दलों की लगभग अनदेखी सी करने का प्रयास कर रही है। कांग्रेस अनेक बार उत्थान और पतन की राजनीति से गुजरी है। लगातार तीन लोकसभा चुनावों में पराजय का दंश झेलने वाली कांग्रेस की विसंगति यही है कि वह केवल विरोध करने की राजनीति ही कर रही है। कांग्रेस के नेताओं का हर बयान मोदी या भाजपा तक ही सीमित रहता है। यह अब कांग्रेस का स्थायी भाव सा बन गया है। इसका मतलब यह भी निकल सकता है कि उनके पास स्वयं की ऐसी कोई उपलब्धि नहीं है, जिसके आधार पर राजनीति की जा सके। अभी हाल ही में प्रियंका वाड्रा ने संसद में कांग्रेस का रटारटाया बयान दिया, जिसमें उन्होंने कहा कि मोदी सरकार संविधान बदलना चाहती है। इसमें कितनी सच्चाई है, यह तो राजनीति करने वाले जानते ही हैं, लेकिन ऐसे बयान इसलिए भी उचित नहीं कहे जा सकते, क्योंकि यह बयान अनुमान पर ही आधारित हैं। यह बयान ठोस नहीं हैं। ऐसे बयानों का मतलब सबको समझ में भी आने लगा है। कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि कांग्रेस की राजनीति आधारहीन होती जा रही है। वास्तव में कांग्रेस को अब समय के हिसाब से प्रासंगिक होना चाहिए। प्रासंगिकता के अभाव में कांग्रेस को अब वैसा भाव नहीं मिल रहा, जैसा कांग्रेस को चाहिए। अभी हाल ही महाराष्ट्र और झारखण्ड में विधानसभा के चुनाव हुए। जिसमें कांग्रेस को जैसे प्रदर्शन की उम्मीद थी, वैसा परिणाम नहीं रहा। झारखण्ड में गठबंधन को सफलता जरूर मिली, लेकिन इसे कांग्रेस की सफलता नहीं माना जा सकता।

महान फ्रांसीसी रसायनज्ञ–लुई पाश्चर

संजय गोस्वामी

लुई पाश्चर का जन्म 27 दिसंबर, 1822, डोल, फ्रांस – एक फ्रांसीसी रसायनज्ञ और सूक्ष्म जीवविज्ञानी थे, जो चिकित्सा सूक्ष्म जीव विज्ञान के सबसे महत्वपूर्ण संस्थापकों में से एक थे। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और चिकित्सा में पाश्चर का योगदान लगभग बेजोड़ है। उन्होंने आणविक विषमता के अध्ययन का बीड़ा उठायाय पाया कि सूक्ष्मजीव किण्वन और बीमारी का कारण बनते हैंय पाश्चराइजेशन की प्रक्रिया शुरू कीय फ्रांस में बीयर, शराब और रेशम उद्योगों को बचायाय और एंथ्रेक्स और रेबीज के खिलाफ टीके विकसित किए। (1822–1895) स्वास्थ्य विज्ञान के क्षेत्र में अपने अनुयायियों और आम जनता द्वारा अत्यधिक सम्मानित हैं। वास्तव में, उनके नाम ने एक घरेलू शब्द–पाश्चुरीकृत के लिए आधार प्रदान किया। उनके शोध, जिसने दिखाया कि सूक्ष्मजीव किण्वन और बीमारी दोनों का कारण बनते हैं, ने रोग के रोगाणु सिद्धांत का समर्थन किया, उस समय जब इसकी वैधता पर अभी भी सवाल उठाए जा रहे थे। रोगों को ठीक करने की अपनी निरंतर खोज में, उन्होंने मुर्गी हैजा के लिए पहला टीका बनायाय एंथ्रेक्स, एक प्रमुख पशुधन रोग है हाल ही में मनुष्यों के खिलाफ रोगाणु युद्ध में इस्तेमाल किया गया हैय और ख़तरनाक रेबीज। प्रारंभिक जीवन और शिक्षा पाश्चर का जन्म फ्रांस के डोल में हुआ था। वे एक चर्मकार परिवार में पाँच बच्चों में से मझले थे जो पीढ़ियों से वहाँ रहते थे। हाई स्कूल के अंत तक युवा पाश्चर की प्रतिभा अकादमिक से ज्यादा कलात्मक दिखाई देने लगी थी। अपने गुरुओं के प्रोत्साहन से प्रेरित होकर, उन्होंने पेरिस के प्रतिष्ठित शिक्षक महाविद्यालय, इकोले नॉर्मले सुपीरियर की तैयारी के लिए अपनी अकादमिक कमियों को सुधारने के लिए एक कठोर पाठ्यक्रम लिया। उन्होंने 1845 में वहाँ से मास्टर डिग्री और 1847 में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। दृश्य कार्य अध्ययन सही समय का इंतजार करते हुए, पाश्चर ने इकोले नॉर्मले में प्रयोगशाला सहायक के रूप में काम करना जारी रखा। वहाँ उन्होंने अपने डॉक्टरेट शोध प्रबंध के लिए शुरू किए गए शोध पर आगे की प्रगति की – कुछ कणों या समाधानों की समतल–बिखरे हुए प्रकाश को दक्षिणावर्त या वामावर्त घुमाने की क्षमता की जाँच करना, यानी ऑप्टिकल गतिविधि प्रदर्शित करना। वह यह दिखाने में सक्षम था कि कई मामलों में यह कार्य यौगिक के क्रिस्टल के आकार से संबंधित है। उन्होंने यह भी दिखाया कि ऐसे प्रकाश–विसरित यौगिकों में अणुओं की एक विशेष आंतरिक व्यवस्था होती है – एक असममित व्यवस्था। इस सिद्धांत का संरचनात्मक रसायन विज्ञान के प्रारंभिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान है – रसायन विज्ञान का वह क्षेत्र जो अणुओं के त्रि–आयामी गुणों का अध्ययन करता है। किण्वन और पाश्चरीकरण लुई पाश्चर अपनी प्रयोगशाला में एक जार में रेबीज से संक्रमित खरगोश की रीढ़ रखते हैं, जिसका उपयोग उन्होंने इस बीमारी के लिए एक टीका बनाने के लिए किया था। लुई पाश्चर अपनी प्रयोगशाला में एक जार में रेबीज से संक्रमित खरगोश की रीढ़ रखते हैं, जिसका उपयोग उन्होंने इस बीमारी के लिए एक टीका बनाने के लिए किया था। विज्ञान इतिहास केंद्रध्ग्रेगरी टोबियास पाश्चर ने इस विषय पर वैज्ञानिक पत्रों और संबंधित शोध के माध्यम से अपनी अकादमिक साख अर्जित की और फिर 1848 में स्ट्रासबर्ग में विज्ञान संकाय और 1854 में लिली में संकाय में नियुक्त हुए। वहाँ उन्होंने अपने किण्वन अध्ययन प्रस्तुत किए। पाश्चर अपने समकालीनों के एक अल्पसंख्यक के दृष्टिकोण से सहमत थे कि हर प्रकार का किण्वन एक जीवित जीव द्वारा किया जाता है। उस समय, अधिकांश लोगों का मानना था कि किण्वन रासायनिक प्रतिक्रियाओं की एक श्रृंखला से विकसित हुआ है जिसमें एंजाइम – जो स्वयं अभी तक जीवन से सुरक्षित रूप से जुड़े नहीं थे – ने प्रमुख भूमिका निभाई। 1857 में पाश्चर वैज्ञानिक अध्ययनों के निदेशक के रूप में इकोले नॉर्मले में लौट आए। वहां स्थापित की गई मामूली प्रयोगशाला में, उन्होंने किण्वन का अध्ययन जारी रखा और आत्म–जिम्मेदारी के सिद्धांत के खिलाफ लंबे समय तक और कड़ी लड़ाई लड़ी। इन बहसों के शुरुआती चरणों में सबसे प्रमुख उनकी किण्वन प्रक्रिया के विभिन्न अनुप्रयोग थे, जिन्हें उन्होंने शराब की बीमारियों से निपटने के लिए शुरू में विकसित और पेटेंट कराया था (1865 में)। उन्होंने महसूस किया कि ये अवांछित बैक्टीरिया के कारण होते हैं जिन्हें शराब को 60ए और 100एब् के बीच के तापमान पर गर्म करके नष्ट किया जा सकता है। इस प्रक्रिया को बाद में दूध जैसे सभी प्रकार के अन्य खराब होने वाले सामानों पर लागू किया गया। जिस समय पाश्चर ने किण्वन का अध्ययन शुरू किया, उसी समय उन्होंने बीमारी के कारण के बारे में भी एक संबंधित दृष्टिकोण अपनाया। उनका और कई अन्य वैज्ञानिकों का मानना था कि बीमारियाँ सूक्ष्मजीवों की गतिविधियों के कारण होती हैं – रोगाणु सिद्धांत। विरोधियों का मानना था कि बीमारियाँ, विशेष रूप से बड़ी बीमारियाँ, सबसे पहले पीड़ित की आंतरिक स्थिति और गुणवत्ता में कमजोरी या असंतुलन से उत्पन्न होती हैं। 1860 के दशक में, कुछ बीमारियों के कारणों की अपनी जांच के आरंभ में, पाश्चर रेशम के कीड़ों को होने वाले विनाशकारी नुकसान के कारण की पहचान करने में सफल रहे, जो उस समय के महत्वपूर्ण फ्रांसीसी रेशम उद्योग का आधार थे। आश्चर्यजनक रूप से, उन्होंने पाया कि एक नहीं बल्कि दो सूक्ष्मजीव इसके लिए जिम्मेदार थे। हालांकि, पाश्चर 1870 के दशक के अंत तक बीमारियों के अध्ययन में पूरी तरह से शामिल नहीं हुए, जब विनाशकारी परिवर्तनों की एक श्रृंखला ने उनके जीवन और फ्रांसीसी राष्ट्र को हिलाकर रख दिया। 1868 में, रेशम के कीड़ों का अध्ययन करते समय, उन्हें एक आघात लगा जिससे उनके शरीर का बायाँ हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया। शरीर है। इसके तुरंत बाद, 1870 में, फ्रांस को प्रशिया ने अपमानजनक रूप से हराया। क्रांति पराजित हुई और सम्राट लुई–नेपोलियन को पदच्युत कर दिया गया। हालाँकि, पाश्चर ने एक नई सरकार खोलने के लिए राज्यपाल के साथ सफलतापूर्वक बातचीत की। सरकार ने उन्हें मुक्त करने के लिए एक नई प्रयोगशाला बनाने पर सहमति व्यक्त की। उन्होंने प्रशासनिक और शिक्षण कर्तव्यों से मुक्त होने और बीमारी का अध्ययन करने के लिए अपनी ऊर्जा को मुक्त करने के लिए पेंशन और विशेष मुआवजे का अनुरोध किया। टीका–प्रतिरोधी वायरसरू मुर्गी हैजा और एंथ्रेक्स बीमारी के खिलाफ अपने शोध अभियान में, पाश्चर ने शुरू में एंथ्रेक्स के बारे में जो कुछ भी जाना था, उसका विस्तार करने पर काम किया, लेकिन जल्द ही उनका ध्यान मुर्गी हैजा की ओर चला गया। इस जांच के परिणामस्वरूप, उन्होंने वायरस को कम करके या कमजोर करके वैक्सीन बनाने का तरीका खोजा। पाश्चर अक्सर प्रयोगशाला में अध्ययन किए जा रहे कल्चर को हर कुछ दिनों में ताजा करते थे – इस मामले में, मुर्गी हैजाय यानी, उन्होंने उन्हें प्रयोगशाला के मुर्गियों के दिमाग में फिर से डाला, और इसका नतीजा यह हुआ कि पक्षियों को बीमारी हो गई और वे मर गए। विज्ञान इतिहास केंद्रध्ग्रेगरी टोबियास महीनों के प्रयोगों के दौरान, पाश्चर ने मुर्गियों में हैजा के कल्चर को निष्क्रिय रहने दिया, जबकि वे स्वयं छुट्टी पर चले गए। जब वे वापस लौटे और उसी प्रक्रिया को दोहराया, तो मुर्गियाँ पहले की तरह बीमार नहीं हुईं। पाश्चर आसानी से जान सकते थे कि कल्चर मर चुका है और उसे पुनर्जीवित नहीं किया जा सकता, लेकिन इसके बजाय उन्हें प्रयोगात्मक मुर्गियों में खतरनाक कल्चर का टीका लगाने का प्रलोभन दिया गया। आश्चर्यजनक रूप से, मुर्गियाँ बच गईं और बीमार नहीं हुईंय वे समय के साथ कमजोर वायरस से सुरक्षित हो गईं। यह महसूस करते हुए कि उन्हें एक ऐसी विधि मिल गई है जिसे अन्य बीमारियों पर भी लागू किया जा सकता है, पाश्चर एंथ्रेक्स के अपने अध्ययन पर लौट आए। पाश्चर ने कमजोर एंथ्रेक्स बेसिली से ऐसे टीके बनाए जो भेड़ों और अन्य जानवरों की प्रभावी रूप से रक्षा कर सकते थे। 5 मई, 1881 को और फिर मई में, पौली–ले–फोर्ट में सार्वजनिक प्रदर्शनियों में, चौबीस भेड़ों, एक बकरी और छह गायों को दर्शकों की भीड़ के सामने नए टीके का दो–भाग का टीका लगाया गया। 17. चौबीस भेड़, एक बकरी और चार मवेशियों के एक नियंत्रण समूह को टीका नहीं लगाया गया था। 31 मई को, सभी जानवरों को घातक एंथ्रेक्स बैक्टीरिया का इंजेक्शन लगाया गया और दो दिन बाद, 2 जून को, भीड़ फिर से इकट्ठा हुई। पाश्चर और उनके सहयोगियों ने जोरदार तालियों के साथ पहुँचे। टीके की प्रभावशीलता निर्विवाद थीरू सभी टीका लगाए गए जानवर बच गए। नियंत्रण जानवरों में से, तीन को छोड़कर सभी भेड़ें थीं, जो दिन के अंत तक मर गईं और चार असुरक्षित गायें सूज गईं और बुखार से पीड़ित थीं। एक बकरी भी मर गई। रेबीज और इंस्टीट्यूट पाश्चर की शुरुआत इसके बाद पाश्चर ने मानव रोग के अधिक कठिन क्षेत्र में जाने का प्रयास किया, जहाँ नैतिक चिंताएँ और भी अधिक थीं। उन्होंने एक ऐसी बीमारी पर ध्यान केंद्रित किया जो जानवरों और मनुष्यों दोनों को प्रभावित करती थी, इसलिए उनके अधिकांश प्रयोग जानवरों पर किए गए, हालाँकि यहाँ भी उन्हें सख्त संदेह का सामना करना पड़ा। रेबीज, एक पसंदीदा बीमारी, ने लंबे समय से कई लोगों को डरा दिया था, हालाँकि यह वास्तव में मनुष्यों में दुर्लभ थी। पाश्चर के टीकाकरण के समय तक, पागल जानवर के काटने पर सामान्य उपचार लाल–गर्म लोहे से दागना था, ताकि बीमारी के अज्ञात कारण को नष्ट किया जा सके, जो हमेशा एक लंबी ऊष्मायन अवधि के बाद दिखाई देता था। रेबीज ने एक सफल वैक्सीन के विकास में नई बाधाएँ पेश कीं, मुख्यत: इसलिए क्योंकि बीमारी पैदा करने वाले सूक्ष्मजीव की सीधे पहचान नहीं की जा सकती थीय और इसे इन विट्रो (प्रयोगशाला में, जानवर में नहीं) में विकसित नहीं किया जा सकता था। अन्य संक्रामक रोगों की तरह, रेबीज को अन्य प्रजातियों में भी प्रसारित किया जा सकता है और कम किया जा सकता है। रेबीज में कमी सबसे पहले बंदरों और बाद में खरगोशों में पाई गई। 6 जुलाई 1885 को कुत्तों को बचाने में सफलता का अनुभव करने के बाद, यहाँ तक कि उन कुत्तों को भी जिन्हें पहले ही किसी पागल जानवर ने काट लिया था, पाश्चर ने कुछ हिचकिचाहट के साथ अपने पहले मानव रोगी, नौ वर्षीय जोसेफ मीस्टर का इलाज करने के लिए सहमति व्यक्त की, जिसे अन्यथा एक पागल जानवर ने काट लिया था, जिसकी निश्चित मृत्यु हो सकती थी। इस मामले और हजारों अन्य मामलों में सफलता ने दुनिया भर के एक आभारी समुदाय को इंस्टीट्यूट पाश्चर को दान करने के लिए प्रेरित किया। इसे आधिकारिक तौर पर 1888 में खोला गया था और यह बायोमेडिकल अनुसंधान के लिए दुनिया के अग्रणी केंद्रों में से एक है। टीकों की खोज और उत्पादन की इसकी परंपरा आज भी दवा कंपनी सैनोफी पाश्चर द्वारा जारी है। पाश्चर के काम से पता चलता है कि वह एक महान प्रयोगकर्ता थे, जो बीमारी के सिद्धांत और प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया से कम चिंतित थे और नए टीके विकसित करके बीमारियों को सीधे संबोधित करने में अधिक रुचि रखते थे। हालाँकि, इन विषयों पर उनके विचारों को देखना संभव है। यह स्पष्ट है। उन्होंने शुरू में प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को शामिल सूक्ष्म जीव की जैविक, विशेष रूप से पोषण संबंधी आवश्यकताओं से जोड़ाय यानी, लक्ष्य द्वारा कमजोर किया गया सूक्ष्म जीव या सूक्ष्म जीव ने अपने शुरुआती हमले के दौरान अपने भोजन के स्रोत को समाप्त कर दिया है, जिससे सूक्ष्म जीव के लिए बाद के हमले मुश्किल हो जाते हैं। बाद में उन्होंने परिकल्पना की कि बैक्टीरिया विषाक्त रसायन उत्पन्न कर सकते हैं जो पूरे शरीर में घूमते हैं, इस प्रकार टीकों में विषाक्त पदार्थों और एंटीटॉक्सिन के उपयोग का सुझाव देते हैं। उन्होंने एली मेटचनिक के सिद्धांत को अपनाकर एक और दृष्टिकोण भी प्रस्तावित किया इंस्टीट्यूट पाश्चर और प्रतिरक्षा प्रणाली के विकास पर उनके काम से। उन्होंने साबित किया कि फगोसाइट् – रक्त में सफेद कणिकाएँ – शरीर से विदेशी पदार्थों को साफकरती हैं और प्रतिरक्षा का प्राथमिक साधन हैं। 28 सितंबर, 1895 को पाश्चर का सेंट–क्लाउड में निधन हो गया ।लेकिन रेबीज के क्षेत्र में उनका महान योगदान हमेशा याद रखा जाएगा।

हर घर में नल जल योजना में भारी लूट

सनत जैन

जल जीवन मिशन, जो ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शुरू किया गया था। यह योजना भ्रष्टाचार और अनियमितताओं की पर्याय बन गई है। हाल ही में प्रकाशित रिपोर्टों मे इस योजना की खामियों और भ्रष्टाचार की लूट को उजागर किया है। जिससे स्पष्ट है, इस महत्वाकांक्षी योजना के पीछे सरकारी तंत्र का प्रचार–प्रपंच और कर्ज के धन मे भारी लूट और आम लोगों की बर्बादी छिपी हुई है। इस योजना के तहत केंद्र सरकार ने राज्यों को 8,957.50 करोड़ रुपये जारी किए। इसके बावजूद परियोजना आधी अधूरी है। राज्यों ने केंद्र सरकार से अतिरिक्त 3,200 करोड़ रुपये की मांग की है। पूर्व में आवंटित धन का सही उपयोग नहीं हो पाया। पानी नहीं है लेकिन पाइपलाइन डल गई। खेतों में पाइप लाइन डाल दी गई ठेकेदार और अधिकारियों ने जल जीवन मिशन में भारी लूट की है। जहां हर घर में पानी देने की बात कही जा रही थी। जहां योजना लागू कर दी गई है। वहां 50 फीसदी घरों में भी नल जल के कनेक्शन नहीं किए जा सके हैं। यह इस बात का संकेत करता है, कि सरकारी विभागों और ठेकेदारों के बीच मिलीभगत से योजना के सरकारी धन का भ्रष्टाचार के रूप में दुरुपयोग हुआ है। योजना की धीमी प्रगति और असफलता के पीछे कई कारण हैं। गांवों में सही सर्वेक्षण न होना, पाइपलाइन बिछाने में देरी, जलश्रोतों की अनुपलब्धता जैसी कई समस्याओं ने इस योजना को जटिल बना दिया। जहां पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है, वहां गुणवत्ता पर ध्यान नहीं दिया गया। अधिकारियों और कर्मचारियों की लापरवाही से स्पष्ट है, 5,546 योजनाओं की डीपीआर तैयार है, इनमें अधिकांश योजनाओं को शुरू करने में देरी हो रही है। इस देरी के पीछे प्रशासनिक औपचारिकताएं और भ्रष्टाचार प्रमुख कारण है। यह स्थिति सिर्फवित्तीय अनियमितताओं की ओर इशारा नहीं करती, बल्कि यह भी दिखाती है कि सरकार की प्राथमिकताएं प्रचार और दिखावे तक ही सीमित हैं। योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता और जवाबदेही का अभाव सरकारी लूट का सबसे बड़ा उदाहरण है। सरकार को चाहिए कि वह इस योजना में हो रहे भ्रष्टाचार और अनियमितताओं की गहन जांच कराए। भ्रष्टाचार और लापरवाही के लिए जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करना चाहिए। जनता के पैसे का सही उपयोग सुनिश्चित हो। विश्व बैंक और अन्य योजनाओं से कर्ज लेकर जल जीवन मिशन की योजना शुरू की गई थी। इसमें गांव–गांव में हर नागरिक तक शुद्ध पेयजल उपलब्ध हो, यह सुनिश्चित किया गया था। लेकिन यह योजना भी भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गई है। अब ग्राम पंचायत और नगरीय निकायों को बोला जा रहा है वह अपने आर्थिक संसाधनों से इस योजना को चालू करें। पंचायत और नगरीय निकाय खुद आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं। ऐसी स्थिति में वह इस योजना के खर्च को बर्दाश्त करने की स्थिति में ही नहीं है। बिजली का बिल चुकाने की भी उनकी हैसियत नहीं है। जल जीवन मिशन जैसे कार्यक्रम तभी सफल हो सकते हैं, जब वे ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ लागू हों। जिन लोगों के लिए यह योजना तैयार की गई है। उनको इसका लाभ किस तरह से मिल सकता है। केंद्र सरकार, राज्य सरकार, नगरीय एवं ग्रामीण संस्थाओं की जिम्मेदारी भी तय की जानी चाहिए थी। जल स्रोत और बिजली उपलब्धता पर भी विशेष ध्यान देने की जरूरत थी। पाइपलाइन कहीं से कहीं डाल दी गई। इसका कोई प्लान तैयार नहीं किया गया, जिसके कारण यह योजना शुरू होने के पहले ही भ्रष्टाचार की भेंट चढ चुकी है। हर घर नल योजना का केंद्र एवं राज्य सरकार ने प्रचार बहुत किया लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में 10 फीसदी लोगों के पास भी शुद्ध पेयजल नहीं पहुंचा है। यह योजना की हकीकत है। पंचायत और नगरीय निकायों की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। हर घर तक पानी पहुंचाने के लिए बिजली और अन्य उपकरणों के रख–रखाव मे होने वाले खर्च की जिम्मेदारी राज्य और केंद्र सरकार को उठाना होगी।

कार खाई में गिरी एक की मौत, चार गम्भीर घायल

हमारे संवाददाता

देहरादून। विकासनगर-चकराता त्यूणी मोटर मार्ग पर लोखंडी के पास पर्यटकों की कार खाई में गिर जाने से जहां एक एक व्यक्ति की मौत हो गई है वहीं चार लोग घायल हुए हैं। कार सवार घायलों को खाई से बाहर निकाल प्राथमिक उपचार के लिए चकराता सीएचसी ले जाया गया। सभी देहरादून से लोखंडी घूमने के लिए निकले थे।

चकराता से पांच पर्यटक लोखंडी घूमने आए थे। इसी दौरान कार अनियंत्रित होकर करीब 200 मीटर गहरी खाई में जा गिरी। कार में पांच लोग सवार थे। इनमें तीन युवक और दो युवतियां थीं। कार दुर्घटनाग्रस्त होते ही स्थानीय लोगों ने राजस्व पुलिस और एसडीआरएफ को सूचना दी। मौके पर पहुंचे राजस्व विभाग के क्षेत्रीय पटवारी अनिल चौहान और स्थानीय लोगों की मदद से खाई से गम्भीर हालत में पांचों पर्यटकों को बाहर निकाला। इसके बाद उन्हें 108 एम्बुलेंस और तहसील के वाहनों से सीएचसी चकराता पहुंचाया गया। अस्पताल के डाक्टर ने एक युवक करन रावत को मृत घोषित कर दिया। जबकि दो युवतियों और दो युवकों को प्राथमिक उपचार के बाद सीएचसी चकराता के डाक्टर रोहित कुमार ने गम्भीर हालत को देखते हुए हायर सेंटर रेफर कर दिया गया।

राजस्व उपनिरीक्षक अनिल चौहान ने बताया की एक वाहन आज सुबह चकराता से लोखंडी की तरफ जाते हुए ग्राम लोहारी लोखंडी मिनार के पास अनियंत्रित होकर 200 मीटर गहरी खाई में जा गिरा। उन्होंने बताया कि कार में तीन युवक और दो युवतियां कुल पांच लोग सवार थे। सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चकराता भेजा गया।

जहां डॉक्टर ने करन रावत उम्र 24 साल चम्बा आराकोट टिहरी को मृत घोषित कर दिया। जबकि घायलों में ऋषभ उम्र 27 निवासी इंद्रापुरम दिल्ली, आकाश उम्र 28 साल निवासी चम्बा, कुमारी वैशाली उम्र 25 निवासी देहरादून, कुमारी सपना उम्र 21 साल निवासी रायवाला देहरादून को हायर सेंटर रेफर किया गया है।

डॉ. मनमोहन सिंह ने दुनिया में भारत का मान बढ़ाया: महारा

पूर्व पीएम मनमोहन सिंह के निधन पर कांग्रेस मुख्यालय में शोक सभा

संवाददाता

देहरादून। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर कांग्रेस मुख्यालय में शोक सभा का आयोजन किया गया।

आज यहां देश के दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह के निध न पर प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय राजीव भवन में शोक सभा में पूर्व प्रधानमन्त्री को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष करण महरा ने डाक्टर मनमोहन सिंह ने न केवल भारत का मान पूरी दुनिया में बढ़ाया बल्कि भारत की अर्थव्यवस्था को बुलंदियों तक पहुंचाने का काम किया। उन्होंने कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था की खिड़कियां दुनिया के लिए खोलने का काम आर्थिक उदारीकरण का दौर देश के वित्त मंत्री के रूप में किया उन्होंने कहा कि देश के प्रधानमन्त्री के रूप में मनरेगा जैसी क्रांतिकारी स्कीम देश में लागू कर ग्रामीण भारत के युवाओं के लिए रोजगार का रास्ता बनाया। नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने दिवंगत डाक्टर मनमोहन सिंह को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि देश और दुनिया ने एक महान अर्थशास्त्री राजनेता को खो दिया है। उन्होंने कहा कि डॉक्टर मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्रित्व काल में सूचना का अधिकार, भोजन का अधिकार, शिक्षा का अधिकार जैसे क्रांतिकारी कानून बनाय गए। शोक सभा का संचालन करते हुए प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सूर्यकान्त धस्माना ने कहा कि डॉक्टर मनमोहन सिंह का भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए अतुलनीय योगदान तो है ही लेकिन उनके पहले कार्यकाल में जो भारत अमरिका परमाणु संधि हुयी वो भारत अमेरिका सबंधों को प्रगाढ़ बनाने में एक मील का पत्थर साबित हुआ।

शोक सभा के अंत में दो मिनट का मौन रखा गया। शोक सभा में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष संगठन मथुरा दत्त जोशी, महामन्त्री महेंद्र नेगी, महामन्त्री नवीन जोशी, डाक्टर जसवंत सिंह गोगी, आनंद सिंह, सुनील जयसवाल, राजकुमार जयसवाल आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कांग्रेसजनों ने दी पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का श्रद्धांजलि

संवाददाता

देहरादून। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

आज यहां पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय, में गहरी शोकसभा का आयोजन किया गया, जहां प्रदेश कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं विधायक प्रीतम सिंह, पूर्व महानगर अध्यक्ष लाल चंद शर्मा, और अन्य कांग्रेस नेताओं ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रीतम सिंह ने इस अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह भारतीय राजनीति के एक आदर्श नेता थे, जिन्होंने देश की दिशा को बदलने के लिए ऐतिहासिक कदम उठाए। उनके नेतृत्व में देश ने 1991 में आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया की शुरुआत की, जिसने भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में मजबूती से खड़ा किया। उनकी नीतियों ने न केवल भारत की आर्थिक स्थिति को सुधारने में मदद की, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत की पहचान को भी एक नई दिशा दी। उनके कार्यकाल में देश ने बड़े आर्थिक बदलाव देखे, जिसमें आर्थिक उदारीकरण, वैश्विक व्यापार में विस्तार, और देश के भीतर बुनियादी ढांचे का विकास शामिल था। पूर्व महानगर अध्यक्ष श्री लाल चंद शर्मा ने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह को एक अर्थशास्त्री के रूप में पूरी दुनिया जानती थी, लेकिन उनके नेतृत्व का एक और पहलू था वह एक सशक्त और संवेदनशील राजनेता थे। हमेशा देश की भलाई को सबसे ऊपर रखा और राजनीतिक फैसलों को दूरदर्शिता और ईमानदारी से लिया। उनका कार्यकाल भारतीय राजनीति में सबसे अधिक सम्मानित और समर्पित दौर के रूप में याद किया जाएगा। उनकी नीतियों ने भारत को विकासशील देशों के रूप में मजबूत किया और दुनिया भर में भारत के सम्मान में वृद्धि की। उनका योगदान भारतीय राजनीति और वैश्विक अर्थव्यवस्था के इतिहास में अमिट रहेगा। प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में अन्य वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं ने भी अपनी भावनाएं व्यक्त की और कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह के योगदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने भारतीय राजनीति को शुद्धता और समझदारी से प्रभावित किया, और उनकी नेतृत्व क्षमता ने भारत को वैश्विक मंच पर सम्मान दिलाया। सभा में उपस्थित सभी नेताओं और कार्यकर्ताओं ने डॉ. मनमोहन सिंह की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखकर प्रार्थना की। साथ ही, पार्टी के नेताओं ने उनके विचारों, कार्यों और नेतृत्व के आदर्शों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रकाश जोशी पूर्व सचिव पर्यवेक्षक देहरादून नगर निगम चुनाव, अभिनव थापर, सीताराम, पूर्ण सिंह रावत, सूरज नेगी, मुन्ना गुरु आदि उपस्थित रहे।

नगर निकाय चुनाव: आज से नामांकन के लिए सभी निकायों में तैयारियां पूरी

इस बार पृष्ठभूमि का शपथपत्र भी देना होगा

संवाददाता

देहरादून। नगर निकाय चुनाव के लिए आज से नामांकन के लिए प्रशासन ने सारी तैयारियां पूरी कर ली है। इस बार पृष्ठभूमिम का शपथपत्र भी देना होगा।

आज यहां राज्य के 100 नगर निकायों में चुनाव के लिए नामांकन शुक्रवार से शुरू होंगे। इसके लिए जिला निर्वाचन अधिकारियों ने संबंधित निकायों में नामांकन की तैयारी पूरी कर ली है। सुबह 10 बजे से नामांकन प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। राज्य निर्वाचन आयोग के मुताबिक, 27 से 30 दिसंबर की शाम पांच बजे तक नामांकन खरीदे और जमा कराए जा सकेंगे। नामांकन पत्र के साथ कर्मचारियों को इस बार अपनी पृष्ठभूमि संबंधी शपथपत्र भी देना होगा।पहली बार व्यय पर्यवेक्षक तैनात हुई है। चुनाव खर्च की सीमा बढ़ाते हुए राज्य निर्वाचन आयोग ने पहली बार व्यय पर्यवेक्षक तैनात किए हैं। खर्च की निगरानी के लिए प्रत्येक जिलाधिकारी के स्तर से भी सहायक व्यय प्रेक्षक नियुक्त किए जाएंगे। उन्हें अपनी शिक्षा से लेकर आपराधिक मामलों की भी जानकारी देनी होगी। इसी जानकारी को जिला निर्वाचन अधिकारी के स्तर से प्रसारित किया जाएगा, ताकि मतदाताओं को अपने प्रत्याशी के बारे में पूरी जानकारी मिल सके। 31 दिसंबर और एक जनवरी को नामांकन पत्रों की जांच होगी। दो जनवरी को सुबह 10 से शाम चार बजे तक नाम वापसी का मौका दिया जाएगा। इसके बाद अंतिम सूची जारी होगी। तीन जनवरी को चुनाव चिह्न आवंटित किए जाएंगे। 23 जनवरी को सुबह आठ से शाम पांच बजे तक मतदान होगा और 25 जनवरी को मतगणना होगी। निकाय चुनाव में खर्च संबंधी शपथपत्र भी देना होगा।

उत्तराखंड में 7 दिवसीय राजकीय शोक हुआ लागू

देहरादून(हमारे संवाददाता)। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर उत्तराखंड में भी सात दिवसीय राजकीय शोक लागू कर दिया गया है। इस दौरान कोई भी सरकारी मनोरंजन, हास्य सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं होंगे साथ ही साथ ऐसे स्थल जहां राष्ट्रीय ध्वज नियमित रूप से फहराए जाते हैं उन स्थलों पर भी सात दिनों तक राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा। सचिव विनोद कुमार सुमन ने इस बाबत सभी जिम्मेदार अफसर को पत्र जारी कर दिया है।

पूर्व पीएम मनमोहन सिंह के निधन पर मुख्यमंत्री धामी ने जताया शोक

संवाददाता

देहरादून। देश के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिह के निधन पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शोक व्यक्त किया।

आज यहां मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने देश के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। अपने शोक संदेश में मुख्यमंत्री ने कहा कि विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए स्वर्गीय मनमोहन सिंह का सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र की सेवा के प्रति समर्पित रहा। मुख्यमंत्री ने पुण्यात्मा को श्रीचरणों में स्थान देने एवं शोक संतप्त परिजनों व समर्थकों को असीम कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है।

एक नजर

गांजे के साथ गिरफ्तार

देहरादून(संवाददाता)। पुलिस ने एक किलो गांजे के साथ एक को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसको न्यायालय में पेश किया जहां से उसको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार ऋषिकेश कोतवाली पुलिस ने मंशा देवी फाटक के पास एक व्यक्ति को संदिग्ध अवस्था में घुमते हुए देखा तो उसको रूकने का इशारा किया। पुलिस को देख वह भाग खडा हुआ। पुलिस ने पीछा कर उसको थोडी दूरी पर ही दबोच लिया। तलाशी लेने पर पुलिस ने उसके कब्जे से एक किलो 500 ग्राम गांजा बरामद कर लिया। पूछताछ में उसने अपना नाम रामअवतार पुत्र महेश्वर साहनी निवासी गूज्जर बस्ती अमित ग्राम बताया। पुलिस ने उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसको न्यायालय में पेश किया जहां से उसको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

बिजली चोरी में दो के खिलाफ मुकदमा

देहरादून(संवाददाता)। पुलिस ने बिजली चोरी में दो लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार केवी उपकेन्द्र विकासनगर के अवर अभियन्ता अमित मित्तल ने विकासनगर कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसने नवघटा में जितेन्द्र पुत्र बलदेव व बलदेव पुत्र मनीराम के मकानों पर छापा मारा तो वहां पर विद्युत मीटर से पूर्व केबल में कट लगाकर बिजली चोरी करते हुए पकडा। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

मोटरसाईकिल चोरी

देहरादून(संवाददाता)। पुलिस ने मोटरसाईकिल चोरी के मामले में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार गुडरिच टी स्टेट निवासी रामाशंकर ने विकासनगर कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि वह किसी काम से डिक्शन कम्पनी में गया था तथा उसने कम्पनी के प्लांट पर अपनी मोटरसाईकिल खडी की थी लेकिन जब वह थोडी देर बाद वापस आया तो उसने देखा कि उसकी मोटरसाईकिल अपने स्थान से गायब थी। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

तमंचे व कारतूस के साथ बीटेक का छात्र गिरफ्तार

देहरादून(संवाददाता)। पुलिस ने तमंचे व कारतूस के साथ बीटेक के छात्र को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज किया। प्राप्त जानकारी के अनुसार कोतवाली पुलिस ने पुराने बस अडडे के पास एक मोटरसाईकिल सवार को रूकने का इशारा किया तो वह पुलिस को देख वह भाग खडा हुआ। पुलिस ने पीछा कर उसको थोडी दूरी पर ही दबोच लिया।

तलाशी लेने पर पुलिस ने उसके कब्जे से एक तमंचा व कारतूस बरामद कर लिये। पूछताछ में उसने अपना नाम कार्तिक चौधरी पुत्र अशोक कुमार निवासी मुरादाबाद बताया। वर्तमान में वह यहां बीटेक का छात्र है। पुलिस ने उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

रिश्तेदार बनकर ठगे 56 हजार रुपये

देहरादून(संवाददाता)। रिश्तेदार बनकर 56 हजार रूपये की ठगी करने के मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार मेहूंवाला माफी निवासी शारिक अली ने पटेलनगर कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसके दोस्त सोनू कुमार मोबाइल पर फोन आया कि वह उसका साढू भाई अंकित बोल रहा वह उसके खाते में 15 हजार रुपये डाल रहा है। वह इस मोबाईल पर 10 हजार रुपये डालो उसके दोस्त के फोन में दिक्कत आ रही थी जिस कारण उसके द्वारा उसको पैसे डालने के लिए कहा उसके उपरान्त उसके द्वारा जिस नम्बर से फोन आया था उससे बात की और उसके बताये अनुसार मोबाइल नम्बर पर अपने खाते युनियन बैंक से फोन पे के माध्यम से 10 हजार रुपये डाले गये जिसके बाद उसके द्वारा उससे लगातार बात करते हुये कहा कि उसको और पैसे डालने पडेगे फिर उसके द्वारा 12 हजार रुपये और डाले गये उसके बाद जीएसटी आदि के नाम पर कुल 56150 हजार रुपये ऑनलाईन धोखाधडी से डलवाये गये। उसके बाद उसके द्वारा अपने फोन नंम्बर व अपने दोस्त के फोन से लगातार फोन किया किन्तु उसने फोन नहीं उठाया तथा उनके द्वारा उसके साढू के दूसरे नम्बर पर फोन कर पूछा तो उसके द्वारा फोन करने तथा पैसे भेजने से मना किया जिस कारण उसको आभास हुआ कि उसके साथ धोखाधडी हो गयी है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

लॉकडाउन में करिए बच्चों के साथ पढ़ाई और ऐसे सुधारिए हैंडराइटिंग

स्मार्टफोन और मोबाइल के बढ़ते चलन ने लोगों की लिखने की आदत को लगभग खत्म सा कर दिया है. जिसके कारण हैंडराइटिंग की अहमियत कम हो गई है. स्मार्ट दुनिया में पैरेंट्स ने भी बच्चों की हैंडराइटिंग पर ध्यान देना कम कर दिया है. अक्सर पैरेंट्स इस बात की शिकायत करते हैं कि उनके पास बच्चों की हैंडराइटिंग सुधारने का वक्त नहीं है. ऐसे लोगों के लिए लॉकडाउन अच्छा समय है. बच्चों के साथ पढ़ाई करने का और उनकी हैंडराइटिंग को ठीक करने का. कैसे सुधारी जा सकती है बच्चों की हैंडराइटिंग. एग्जाम में अक्सर बच्चों को लगता है कि उन्हें नंबर लाने के लिए सिर्फ पढ़ाई की जरूरत है. परन्तु ऐसा नहीं है एग्जाम पेपर में गंदी लिखावट के कारण भी नंबर कम मिलते हैं. एग्जाम में अच्छे नंबर लाने के लिए लिखावट का सुंदर और स्पष्ट होना बेहद जरूरी है. अगर आप भी अपने बच्चे की खराब हैंडराइटिंग को उसकी सफलता की राह का पत्थर नहीं बनने देना चाहते हैं तो बच्चों की हैंडराइटिंग को सुधारने में आज ही लग जाइए.

वीर बाल दिवस: नव्य भारत फाउंडेशन ने किये इंटर कॉलेज में सेनीटरी पैड्स वितरित

संवाददाता

देहरादून। वीर बाल दिवस पर नव्य भारत फाउंडेशन ने इंटर कालेज बालावाला में सेनीटरी पैड्य वितरित किये। आज यहां नव्य भारत फाउंडेशन (एनबीएफ भारत) द्वारा "मिशन अपर्णा शक्ति के अंतर्गत विशाल सेनेटरी पैडस वितरण कार्यक्रम इंटर कालेज, बालावाला, देहरादून, उत्तराखंड में स्कूली छात्राओं के मध्य वीर बाल दिवस शहीदी सप्ताह के अवसर पर आयोजित किया गया, जिसमें छात्राओं को सेनीटरी पैड वितरित किए व स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया गया। इस मौके पर नव्य भारत फाउंडेशन एवं एसएपीटी के संस्थापक व राष्ट्रीय अध्यक्ष, पीजीआई चंडीगढ़ के फिजीयोथेरेपिसट डा. अनिरुद्ध उनियाल ने बताया कि एनबीएफ भारत महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सदैव संकल्पित है और निरंतर महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य कर रही है, साथ ही उन्होंने वूमेन हेल्थ के विषय पर संबोधित कर सभी को स्वस्थ रहने के लिए जागरूक किया। इस मौके पर इंटर कालेज के प्रधानाचार्य संजय बिजलवाण, टीम एनबीएफ से दिव्यांशी, शताक्षी, मोहित काला, डॉ. साक्षी, सौरभ, संजय व अन्य शिक्षक, टीम के सदस्य प्रमुख रूप से उपस्थित रहे व टीम एनबीएफ ने स्कूल स्टाफ का धन्यवाद व्यक्त किया।

बस यूनियन ने ट्रेफिक सब इंस्पेक्टर की शिकायत की डीजीपी से

देहरादून(संवाददाता)। बस चालकों को परेशान करने का आरोप लगाते हुए बस यूनियन ने यातयात इंस्पेक्टर की शिकायत डीजीपी की। आज यहां बस यूनियन अध्यक्ष विजय वर्धन डंडरियाल ने पत्र के माध्यम से डीजीपी एवं निदेशक यातायात को एडिशनल ट्रैफिक इंस्पेक्टर योगेंद्र सिंह की शिकायत की गई जिसमें कहा गया कि यह ट्रैफिक सब इंस्पेक्टर द्वारा जानबूझकर सिटी बस वाहन स्वामियों के नियम विरूद्ध भारी भरकम चालान काटे जा रहे है क्योंकि इसका एक मुख्य कारण यह है की योगेंद्र सिंह की शिकायत पूर्व में उनके द्वारा की गई थी। योगेंद्र सिंह द्वारा धमकी भरे लहजे में पूर्व में उनको बताया गया था कि उनके ऊपर मर्डर का चार्ज है जिसकी उसके द्वारा पुलिस कार्यालय सूचना मांगने पर इसे उस व्यक्ति की व्यक्तिगत सूचना बता कर सूचना नहीं दी गई। योगेंद्र सिंह द्वारा घंटाघर क्षेत्र में एक व्यक्ति की पिटाई कर उसे चोट पहुंचाई इसके संबंध में उनके द्वारा जानकारी मांगने पर इसमें पुलिस विभाग द्वारा कहा गया कि इसमें जांच जारी है। योगेंद्र सिंह द्वारा बल्लूपुर क्षेत्र में एक सिटी बस चालक से चालान का भय दिखाकर एक हजार रुपए की रिश्वत ली गई जिसमें इसकी शिकायत वाहन चालक द्वारा शपथ पत्र देकर डीजीपी के समक्ष शिकायत की गई थी जिसमें डीजीपी द्वारा जांच के आदेश दिए गए थे। योगेंद्र सिंह द्वारा यह सब जानबूझकर सिटी बस वाहन स्वामियों को अपनी वर्दी का रौब दिखा कर प्रताड़ित कर रहा है। उनके द्वारा कहा गया है कि योगेंद्र सिंह का ट्रांसफर जॉइनिंग करते समय इनकी मूल तैनाती पर किया जाए और इनके ऊपर लगे अभियोगो के प्रकरणों की जांच अतिशीघ्र कराकर नियमानुसार कार्यवाही की जाए अन्यथा इस तानाशाह एवं भ्रष्ट अधिकारी के खिलाफ आंदोलन को बाध्य होना पड़ेगा जिसकी जिम्मेदारी पुलिस अधिकारियों की होगी।

पूर्व प्रधानमंत्री के निधन पर परिषद ने शोक सभा का किया आयोजन

संवाददाता

देहरादून। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर उत्तराखण्ड आंदोलनकारी संयुक्त परिषद ने शोक सभा का आयोजन किया।

आज उत्तराखंड आंदोलनकारी संयुक्त परिषद के कार्यकर्ताओं ने कचहरी परिसर में देश के भूतपूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर एक शोक सभा का आयोजन किया। जिसमें वक्ताओं ने कहा कि मनमोहन सिंह जी एक कुशल राजनीतिज्ञ थे देश के लिए बहुत ही हानिकारक हुआ है उनकी क्षतिपूर्ति होना असम्भव है। संयुक्त परिषद के कार्यकर्ताओं ने कहा कि मनमोहन सिंह जैसे व्यक्ति कभी-कभी पैदा होते हैं मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि देने वालों में उत्तराखंड आंदोलनकारी संयुक्त परिषद के संरक्षक नवनीत गोसाई व प्रदेश उपाध्यक्ष प्रभात डंडरियाल जिला अध्यक्ष सुरेश कुमार प्रवीण गुसाई धर्मानंद भट्ट अनुराग भट्ट जगमोहन रावत बालेश बवानिया आदि उपस्थित रहे।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, एडवोकेट
बैजनाथ, एडवोकेट

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।